

जूल 2017

दादावाणी

कीमत ₹ 10



भगवान ने एक ही व्यवहार के बारे में कहा था कि जो तेरे अन्दर में आए उसका रक्षण करना।
जिन्होंने अन्दर हैंड का रक्षण किया वे भगवान बने हैं।

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : 12 अंक : 8

अखंड क्रमांक : 140

जून 2017

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahaveidh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Owned by

Mahaveidh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printed at

Amba Offset

Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahaveidh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अन्डर हैन्ड के साथ काम करते समय

संपादकीय

अक्रम ज्ञान प्राप्त करने के बाद महात्माओं को बाकी बचा जीवन पाँच आज्ञा में रहकर पूरा करना होता है। व्यवहार जगत् में प्रत्येक व्यक्ति को अलग-अलग समय में, अलग-अलग रोल अदा करने होते हैं, जैसे कि माँ-बाप को बेटे के साथ, पति-पत्नि के बीच, घर में छोटों को बड़ों के साथ, ऑफिस में बॉस को सबॉर्डिनेट के साथ, गुरु-शिष्य या सहाध्यायियों के साथ, घर में या ऑफिस में काम करने वाले नौकरों के साथ। ऐसे अनेक प्रकार के संबंधों को व्यवहार में यदि संक्षेप में वर्गीकृत किया जाए तो एक ऊपरी और एक अन्डर हैन्ड के रूप में व्यवहार दृष्टि गोचर होता है। इन सभी व्यवहारों में हमें जीवन इस प्रकार से जीना चाहिए ताकि हम से किसी को किंचित्मात्र भी दुःख न हो। जिससे किसी को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं होता, वह खुद सुखी रहता है। इसमें कोई दो मत नहीं हैं।

ऊपरी किसे कहेंगे? जो अन्डर हैन्ड को संभाल ले। आश्रित को दुःख हो, ऐसा व्यवहार करना अथवा उसे डाँटना, वह बहुत बड़ा अहंकार है। अगर पूर्वाग्रह के बगैर डाँटा जाए तो वह काम का है। सिर्फ व्यक्ति के रूप में सभी अलग हैं लेकिन हैं आत्मा ही, अर्थात् वे भी भगवान ही हैं। इसलिए किसी का नाम नहीं लेना और किसी को छोड़ना भी नहीं। अपने हाथ अन्डर हैन्ड को झिड़काने के लिए नहीं हैं। उनका कभी भी तिरस्कार मत करना। अपने अन्डर हैन्ड को मानपूर्वक रखना। उसे संतोष हो, उस तरह से हमें अपना काम निकाल लेना है। जितना हो सके उतना आत्मा के लिए ही करते रहने जैसा है, क्योंकि इस संसार में तो कुछ भी इधर-उधर नहीं होने वाला।

अगर कोई व्यक्ति जरा सा भी गुस्सा करे तो उसे खुद सहन नहीं कर सकता और खुद दूसरों के साथ पूरा दिन गुस्सा करता रहता है। यह कैसा अन्याय है? ऐसे तो कितने ही भयंकर दोष किए हैं, जिनका खुद को पता ही नहीं चलता। भगवान ने एक ही प्रकार का व्यवहार कहा था कि तेरे अन्डर में जो भी आए, उनका रक्षण करना। जिन्होंने अन्डर हैन्ड का रक्षण किया, वे भगवान हुए।

जगत् अर्थात् परस्पर सद्भावना। ऊपरी हो या फिर नौकर लेकिन परस्पर सद्भावना होनी चाहिए और हेलिपिंग नेचर होना चाहिए, ऑब्लाइजिंग नेचर होना चाहिए। हमारे प्रतिदिन के व्यवहार में यह भाव होना चाहिए कि चीजों की नहीं लेकिन व्यक्ति की कीमत है। किसी भी व्यक्ति के साथ बैर न बंधे उस तरह से अहिंसक रूप से फाइलों का निकाल करके, प्रेम स्वरूप वर्तन कर सकें, ऐसे भाव पुरुषार्थ के साथ हम अपना काम निकालने में सफल हों, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

अन्दर हैन्ड के साथ काम करते समय

भगवान पद का थर्मामीटर

कीमत चीज़ों की या व्यक्ति की?

मोक्ष का मार्ग इतना सरल नहीं है। यह तो, यहाँ पर सरल मार्ग खुल गया है, वहाँ अपना काम निकाल लेना है। सरल मार्ग और वह भी चिंता रहित! वर्ना कढ़ापा-अजंपा (अकुलाहट) सभी को होते हैं।

बड़े मिल मालिक भी, यदि नौकर कभी दस कप-प्लेट लेकर आ रहा हो और ट्रे हाथ में से गिर जाए, तब भी उसका आत्मा फूट जाता है। अरे, चार-चार मिलों के मालिक हो और कैसे हो? ऐसे तो कैसे हो कि इस प्याले में ही आत्मा आ गया? चार मिलों का मालिक तो क्या तू गरीब है?

यह कढ़ापा-अजंपा बंद हो जाए न तो वह इंसान क्या कहलाएगा? वह इंसान भगवान कहलाएगा। क्योंकि लोग क्या कहते हैं कि मनुष्य कढ़ापा-अजंपे रहित हो ही नहीं सकता। प्याले फूटने पर किसी को कढ़ापा-अजंपा होता है और किसी को पेन खोने पर कढ़ापा-अजंपा होता है। किसी की गाड़ी उसके ड्राइवर ने ज़रा खराब कर दी हो तो उसे कढ़ापा-अजंपा हो जाता है। कुछ न कुछ कढ़ापा-अजंपा हुए बगैर रहता ही नहीं। किसी का डाइनिंग टेबल किसी ने बिगाड़ दिया हो तो उसे कढ़ापा-अजंपा हो जाता है। पूरे दिन कढ़ापा-अजंपा ही करता रहता है। जिसका कढ़ापा-अजंपा गया, उसे जगत् भगवान ही कहता है! अब किसलिए इतना बड़ा पद कहा होगा? क्योंकि कोई भी इंसान कढ़ापा-अजंपा रहित नहीं होता इसलिए कढ़ापा-अजंपा, बस इतना ही शब्द जिसमें से निकल गया, वह भगवान कहलाएगा। वह भगवान अपना थर्मामीटर!

सत्तर साल का व्यक्ति भी, यदि दो प्यालें फूट गए हों और आवाज़ सुने तो बोलेंगा, ‘अरे, यह क्या फूटा?’ दो प्यालों में तो जैसे आत्मा फूट गया हो न, ऐसा होता है और पूरा ही जगत् ऐसा करता है न? अब, ‘इसमें कौन फोड़ता है?’ वह जानता नहीं और ‘नौकर ने ही फोड़े’ ऐसा कहता है। अरे, नौकर तो फोड़ता होगा? नौकर कहीं अपना विरोधी नहीं है। अब, नौकर का गुनाह नहीं है लेकिन फिर भी लोग ऐसा बोलते रहते हैं न कि ‘नौकर ही फोड़ते हैं’!

वर्ना, प्याला तो यह छोटा बच्चा भी नहीं फोड़ता। इस छोटे बच्चे से कहें कि, ‘जा बेटा, ये प्याले बाहर फेंक आ।’ तो नहीं फेंकेगा। तब वह कंधे उचकाता है। वह समझता है कि ये प्याले नहीं फेंकने चाहिए। अब यदि छोटा बच्चा भी नहीं फोड़ता तो इतना बड़ा नौकर तो क्यों फोड़ेगा?

बहुत दिनों तक ऐसा हो तो नौकर फिर एक दिन चाकू मारकर चला जाता है। तब फिर लोग शोर मचाते हैं कि 'अब तो नौकर मार डालते हैं!' आप उसे रोज़ मारते रहते हो तो फिर एक दिन वह पूरा मार देता है! इसलिए 'नौकर के साथ कैसे बरताव करना चाहिए' उसे वह समझना नहीं पड़ेगा?

उसे कहा ज्ञान

एक सेठ आए थे। मैंने उनसे कहा, 'हम पच्चीस लोग आपके यहाँ चाय पीने आएँ और तब अगर नौकर के हाथ में से पच्चीस कप-प्लेट गिर जाएँ तो तब आपको क्या होगा?' तब वे कहने लगे, हम नौकर से इतना पूछेंगे कि, 'भाई तू जला तो नहीं न?' तब मैंने कहा, 'बहुत अच्छा कहा जाएगा।' देखो हिंदुस्तान में कैसा आश्चर्य भरा हुआ है!

वर्ना तो, जैसे ही पच्चीस कप-प्लेट टूटे कि तुरंत ही मन में विचार आ जाता है कि 'इस नौकर ने सवा सौ रुपए का नुकसान कर दिया'। हिसाब लगा लेता होगा, क्यों? पेपर पर तो थोड़ा समय लगता है लेकिन मन में तो समय ही नहीं लगता!

आपके प्याले फूट जाएँ, तब क्या करोगे आप?

प्रश्नकर्ता : कुछ भी नहीं होगा।

दादाश्री : क्या बात कर रहे हो? ऐसे पचासी का उधार तो हो चुका, अब और पंद्रह साल आने वाले हैं, तो सौ पूरे होंगे फिर?

प्रश्नकर्ता : भले ही हों, 'यह' प्याला भी फूटना ही है फिर।

दादाश्री : ऐसा! देह को प्याला कह रहे हो? तब ठीक! इसे ज्ञान कहते हैं!

विनाशी को कीमती मान बैठे हैं

यदि एक पुराना मटका टूट जाए, तब सेठ क्या कहता है? कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। क्योंकि उसकी बहुत वैल्यू ही नहीं न! उसी प्रकार इस (देह की कीमत) मटके जैसी है। इसकी क्या वैल्यू? जब वह 'मूल वस्तु' को देखता है, तब इसकी कीमत मटके जैसी लगती है। पूरा संसार मान बैठा है न! बहुत कीमत मान बैठा है नहीं? इस मटके की कीमत बहुत मानी है, क्यों?

बुद्धि बढ़ने से कुढ़न बढ़ जाती है

जो व्यक्ति बहुत जागृत हो, उसे प्याला फूटने पर भी भीतर क्लेश होता है। जिसमें थोड़ी मोटी बुद्धि हो, उसे कम क्लेश होगा या तेज बुद्धि वाले को? प्याला फूटने पर जागृत (व्यक्ति) को ज़्यादा कुढ़न होती है क्या?

प्रश्नकर्ता : जागृत को ज़्यादा कुढ़न होती है।

दादाश्री : वह तो हमने कहा है न! बुद्धि बढ़ी तो काउन्टर वेट में कुढ़न बढ़ेगी। और जो बुद्धि से बैल है, उसे क्या झंझट?

प्रश्नकर्ता : कुछ भी नहीं।

दादाश्री : अगर कोई दो गालियाँ सुना दे, तब फिर थोड़ी देर बाद वह कहता है, 'अब क्या करूँ?' आज अभी खा-पीकर थोड़ा आराम कर लूँ, सो जाऊँ। 'अरे भाई! तुझे नींद आएगी?' 'वह बात? दुनिया तो चलती ही रहेगी'। वे लोग एक ओर रख देते हैं, जबकि ये अक्ल वाले तो सिर पर ले लेते हैं। 'लोड' सिर पर ले लेते हैं।'

अगर आदिवासियों के प्याले फूट जाएँ न तो क्योंकि उनका अज्ञान पतला है इसलिए कुछ नहीं जबकि इनका अज्ञान तो मोटा है!

किसी व्यक्ति के वहाँ हम चाय-पानी के लिए जाएँ और वहाँ नौकर के हाथ से ट्रे गिर जाए और कप-प्लेट फूट जाएँ तो उस व्यक्ति पर कोई इफेक्ट नहीं होता है, इतने छोटे से मामले में भी अगर इफेक्ट नहीं होता तो जगत् के लोग उसे महान पद कहते हैं। यह तो छोटी सी बात कहलाएगी न? लेकिन हर जगह, जहाँ देखो वहाँ यही बखेड़ा है। शिष्य से ज़रा सा कुछ टूट जाए तो शिष्य की हालत खराब कर देते हैं!

ऐसे जीवन में क्या सुख?

बड़े-बड़े सेठों से मैं पूछता हूँ कि, 'सेठ, आप ये महँगे नए कप-प्लेट लाए हो और नौकर उनमें चाय लेकर आ रहा हो ट्रे में, छः कप और छः प्लेट लेकर आ रहा हो और नौकर के हाथ से वह ट्रे गिर जाए तो आप पर कोई असर होगा?' तब कहते हैं कि, 'अरे, बहुत होगा, ऐसे अजंपा (बेचैनी) हो जाएगा!' तब मैंने कहा कि, 'क्या आप इस अजंपे के लिए कोई दवाई नहीं चुपड़ते?' तब कहने लगे कि, 'उसकी दवाई होती ही नहीं है न!' मैंने कहा कि, 'तो फिर आप किस आधार पर जीते हो? कोई आधार नहीं है? जीवन का भी आधार चाहिए या नहीं चाहिए?'

वे सेठ तो कहेंगे, 'इसकी दवाई ही नहीं है!' तो भाई, तेरी क्या दशा होगी? मनुष्य को अजंपा कैसे सहन हो? यह अजंपा पसंद तो नहीं है, फिर भी लोग क्या कहते हैं कि, 'लेकिन संसार में तो यही रहता है न!' यदि ऐसा ही हो तो फिर जीने का अर्थ ही क्या है? तो मीनिंगलेस है और अजंपे के साथ तूने क्या सुख भोगा?

वहाँ पर किस तरह से व्यवहार करना?

मोक्ष में नहीं जाना हो लेकिन यहाँ पर तो उंडक तो होनी चाहिए न? भीतर अजंपा नहीं हो, उतना तो समझना पड़ेगा न? प्याला फूट जाए और कढ़ापा-अजंपा करें, तो वह अपनी ही भूल है न? या प्याले की भूल है?

प्रश्नकर्ता : अपनी ही भूल है।

दादाश्री : यानी सिर्फ सेठ ही अजंपा नहीं करते, सेठानी भी भीतर अजंपा करती रहती हैं। वह अकेला अजंपा कर रहा है, उसमें आप क्यों भागीदारी कर रही हो? लेकिन उसमें भी पार्टनरशीप! वे दोनों पार्टनर हैं इसमें भी! अरे, एक भागीदार अकुलाए तो बहुत हो गया, एक को ही अकुलाने दो न! सभी भागीदारों के अकुलाने का कारण क्या है? कंपनी में एक भागीदार अकुलाए कि बहुत हो गया! भले ही एक का बिगुल बजे! लेकिन सभी के बिगुल साथ में क्यों बजाएँ? सब क्यों बजाते होंगे? इच्छा नहीं हो तब भी बज जाता है क्योंकि अज्ञान उसे जोड़ देता है न! और जब सभी बिगुल बजने लगें, तब वह नौकर तो काँप जाता है! जब सभी घेर लेते हैं तब वह बच्ची होती है न, वह भी किच-किच करती हुई आती है कि, 'अरे, इस बेवकूफ को तो मारने जैसा है।' तब फिर नौकर की क्या दशा होगी? तब नौकर बेचारा अकेला फँस जाता है।

नौकर के मन में क्या होता है कि, 'यह सेठ मुझे बिना बात के डाँट रहा है, मेरा गुनाह नहीं है। मैं तो नौकर हूँ और नौकरी कर रहा हूँ, इसलिए मुझे डाँट रहा है।'

ऐसा कभी सोचा है क्या?

अब मैं क्या कहता हूँ कि 'अगर आप इस

नौकर की जगह पर हों तो आपका न्याय कैसा रहेगा?’ फिर नौकर को गालियाँ दीं तो वह घोर अन्याय नहीं है? इन्डियन फिलॉसोफी क्या ऐसी होती होगी? वास्तव में तो हमें इतना अधिक नोबल रहना चाहिए। हम वहाँ पर होंगे तो क्या करेंगे कि नौकर के हाथ में से ट्रे गिर जाए और प्याले फूट जाएँ तो पहले तो हम नौकर से पूछेंगे कि, ‘भाई, गरमागरम चाय तेरे पैर पर गिर गई तो तू जल तो नहीं गया न? भले ही प्याले फूट गए, वे तो दूसरे आ जाएँगे लेकिन तू तो जला नहीं है न?’ पहले ऐसा पूछना पड़ेगा, तब उसे कितना अच्छा लगेगा? ऐसा आश्वासन उसके घर पर भी कोई नहीं दे, वैसा आश्वासन देना तो नौकर के मन में कितना अच्छा लगेगा? नौकर भी आत्मा ही है न?

वह खूब जल गया हो और हम कुछ बोलें तो वह गलत कहलाएगा। अगर नहीं जला हो तो फिर दूसरी बात करना कि, ‘भाई, ज़रा धीरे से आहिस्ता-आहिस्ता आए तो ऐसी परेशानी नहीं होगी।’ फिर ऐसे कहना पड़ेगा। ऐसा नहीं कहा तो वह भी गुनाह कहलाएगा क्योंकि सावधान करने के लिए ऐसे टोकना तो पड़ेगा लेकिन इस तरह मत टोकना कि, ‘तेरे हाथ टूटे हुए हैं, तू ऐसा है, वैसा है।’ ऐसे मत टोकना। उसे तो टोकना भी नहीं कहा जाएगा, हिंसा कहा जाएगा। नौकर बेचारा भी ऐसी ही आशा रखता है कि अभी मुझे ऐसा कहेंगे, ‘तेरे हाथ टूटे हुए हैं,’ इसीलिए भीतर काँप रहा होता है कि, ‘अब क्या कहेंगे? सेठ-सेठानी अब क्या कहेंगे?’ नौकर मन में समझता है कि ये सेठ और सेठानी दोनों ही चीते जैसे हैं। जैसे चीते दहाड़ते हैं, वैसे ही ये दहाड़ेंगे इसलिए अंदर वह इस तरह से डरता है। अब उस सेठ को मैं समझाता हूँ कि, ‘सेठ, आप

उसकी जगह पर होते तो क्या होता?’ ‘तो मेरी क्या दशा होगी? मुझे कितना दुःख होगा?’ कोई ऐसा सोचता है? ऐसा सोचो तो सही।

करो व्यवहार, मानवतापूर्ण

यदि तेरे हाथ से गिर जाते तो तू क्या न्याय करता? हमें उसी तरह न्याय करना चाहिए लेकिन वहाँ हम ऐसा न्याय करते हैं कि ‘इसने नुकसान किया।’ लेकिन क्या वह कोई बाहरी व्यक्ति है? और यदि बाहरी व्यक्ति हो तो भी, नौकर हो तो भी ऐसा नहीं करना चाहिए। वह किस नियम के आधार पर गिर जाता है? वह गिराता है या गिर जाता है? इसका विचार नहीं करना चाहिए? नौकर क्या जान-बूझकर गिराता है? अब वह तो नौकर रहा बेचारा। वास्तव में नौकर कभी कुछ तोड़ता नहीं है। वह तो ‘रोंग बिलीफ’ से ऐसा लगता है कि नौकर ने तोड़ा। वास्तव में तोड़ने वाला कोई और ही है। अब वहाँ निर्दोष को दोषी ठहराते हैं। किसी भी जन्म में फिर नौकर उसका फल देता है।

प्रश्नकर्ता : तो उस समय तोड़ने वाला कौन हो सकता है?

दादाश्री : हम जब ‘ज्ञान’ देते हैं उस समय वे सारे खुलासे कर देते हैं। यह तोड़ने वाला कौन, चलाने वाला कौन, वह सब ‘सॉल्व’ कर देते हैं। अब वहाँ वास्तव में क्या करना चाहिए? भ्रांति में भी क्या अवलंबन लेना चाहिए? नौकर तो ‘सिन्सियर’ है, वह ऐसा नहीं है कि तोड़े।

प्रश्नकर्ता : चाहे कितना भी ‘सिन्सियर’ हो लेकिन यदि नौकर के हाथों टूट गया तो क्या परोक्ष रूप से वह जिम्मेदार नहीं है?

दादाश्री : ज़िम्मेदार है ! लेकिन वह कितना ज़िम्मेदार है, वह समझ लेना चाहिए। सब से पहले उसे पूछना चाहिए कि 'तू जला तो नहीं न?' जल गया हो तो दवाई लगाना। फिर धीरे से कहना चाहिए कि 'अब तेज़ी से मत चलना आगे से।'

...तो होगा नियमानुसार

यदि कोई अपने पर गुस्सा करे वह हम से सहन नहीं होता लेकिन पूरे दिन दूसरों पर गुस्सा करते रहते हैं। अरे! यह कैसी अक्ल? यह मानव धर्म नहीं कहलाता। वही मनुष्य पूरा दिन सब पर गुस्सा करता रहता है, क्योंकि वे दबे हुए हैं इसीलिए न? दबे हुआ को मारना तो बहुत बड़ा अपराध कहलाता है। मारना हो तो ऊपरी को मार! भगवान अथवा ऊपरी को, क्योंकि वे आपके ऊपरी हैं, शक्तिमान हैं। यह तो अन्डर हैंड अशक्त है इसलिए ज़िंदगीभर उसे झिड़के रहता है।

वास्तव में मानव धर्म किसे कहा जाता है? यदि आप सेठ हों और नौकर को बहुत धमका रहे हैं तो उस समय आपको ऐसा विचार आना चाहिए कि, 'अगर मैं नौकर होता तो क्या होता?' इतना विचार आए तो फिर आप उसे मर्यादा में रहकर धमकाएँगे, ज़्यादा नहीं कहेंगे। यदि आप किसी का नुकसान कर रहे हों तो उस समय आपको यह विचार आए कि 'मैं सामने वाले का नुकसान कर रहा हूँ परंतु कोई मेरा नुकसान करे तो क्या होगा?'

खुद को औरों की जगह पर रखना वही मानव धर्म। दूसरा धर्म तो फिर अध्यात्म, वह तो उससे आगे का रहा लेकिन इतना मानव धर्म तो आना चाहिए।

समझो न्याय क्या, अन्याय क्या ?

भगवान का न्याय क्या है कि जितने भी देहधारी जीव हैं, फिर पेड़ हो या चाहे जो हो लेकिन जीवित हैं। जीवित हैं, ऐसा कैसे पता चलेगा, कि यदि पेड़ को काट दें तो उसका लावण्य चला जाएगा, यानी जितने भी लावण्य वाले जीव हैं, उनके भीतर भगवान बैठे हैं। इसलिए अगर उन्हें किंचित्मात्र भी दुःख हो तो, वह सब अन्याय कहा जाएगा। 'घोर अन्याय किया' कहलाएगा!

ऐसे तो भयंकर दोष किए हैं! खुद को पता भी नहीं चलता कि 'मैंने यह दोष किया है।' नौकर के साथ ऐसा बर्ताव करने के बाद, 'ऐसा दोष हो गया है,' ऐसा भी पता नहीं चलता। 'नौकर ही गलत है, उसे निकाल देना है,' ऐसा कहता है और इसलिए खुद को ये सभी अड़चनें हैं इसीलिए मोक्ष नहीं मिलता, वरना यदि मोक्ष के न्याय को समझे न तो संपूर्ण मोक्ष मिले, ऐसा है। संसार का न्याय, वह न्याय नहीं है। भगवान का न्याय, वह न्याय है।

अगर एक घंटे भी, नौकर को, बच्चे या पत्नी को डाँटा हो तो फिर वह पति बनकर या सास बनकर आपको पूरी ज़िंदगी कुचलते रहेंगे। न्याय तो होना चाहिए या नहीं? यही भुगतना होगा। आप अगर किसी को सिर्फ एक ही घंटे के लिए दुःख दोगे तो फलस्वरूप आपको पूरी ज़िंदगी दुःख मिलेगा।

अतः हम सभी को इतना अच्छा न्यायी जीवन जीना चाहिए कि किसी को भी दुःख नहीं हो। बॉस को दुःख नहीं हो, अन्डर हैंड को दुःख नहीं हो, घर पर वाइफ को दुःख नहीं हो, बच्चों को दुःख नहीं हो, ऐसा जीवन जीने के लिए आपको आपकी 'मशीनरी' 'ज्ञानीपुरुष' से

‘ओवरहॉल’ करवानी पड़ेगी। ओवरहॉल करवाने का टेन्डर लाए हो?

प्रश्नकर्ता : आपकी वाणी में भी कॉन्ट्रैक्टर की भाषा निकलती है।

दादाश्री : हाँ, ऐसी ही निकलती है! हम कॉन्ट्रैक्टर हैं न इसलिए ये टेन्डर वगैरह के बारे में सब जानते हैं।

दुःखमुक्त होने के लिए सुख दो

इस जगत् में आप किसी को दुःख दोगे तो उसका प्रतिस्पंदन आप पर पड़े बगैर रहेगा नहीं। स्त्री-पुरुष के तलाक के बाद पुरुष फिर से विवाह करे, फिर भी उस स्त्री को दुःख रहे तो उसके प्रतिस्पंदन उस पुरुष पर पड़े बगैर रहेंगे ही नहीं और उसे वह हिसाब फिर से चुकाना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : ज़रा विस्तारपूर्वक समझाइए न!

दादाश्री : यह क्या कहना चाहते हैं कि जब तक आपके निमित्त से किसी को थोड़ा भी दुःख होता है तो उसका असर आप पर ही पड़ेगा। और वह हिसाब आपको पूरा करना पड़ेगा, इसलिए सचेत रहो।

आप ऑफिस में आसिस्टन्ट को झिड़को तो उसका असर आप पर पड़े बगैर रहेगा या नहीं? पड़ेगा ही। बोलो अब जगत् दुःख में से मुक्त किस तरह हो पाएगा? जिससे किसी को भी किंचित्मात्र दुःख नहीं होता हो, वह खुद सुखी होता है। उसमें दो मत हैं ही नहीं।

यह जगत् अपना है, इसमें अन्य किसी की ज़िम्मेदारी है ही नहीं। भगवान यदि ऊपरी होते न, तब तो हम समझें कि ‘हम पाप करेंगे और भगवान की भक्ति करेंगे तो धुल जाएगा,’ लेकिन ऐसा नहीं

है। यह तो अपनी ही ज़िम्मेदारी है। किंचित्मात्र, एक भी उल्टा विचार आया तो उसकी ज़िम्मेदारी अपनी ही है। होल एन्ड सोल रिस्पॉन्सिबल हम ही हैं। ऊपर कोई बाप भी नहीं है। आपका कोई ऊपरी है ही नहीं, जो हो, वह आप ही हो।

छेड़ने में जोखिम बहुत है

आपके यहाँ कोई नौकरी कर रहा हो तो कभी भी उसका तिरस्कार मत करना, छेड़ना मत, सभी को मानसहित रखना। न जाने किस व्यक्ति से हमें क्या लाभ हो जाए! आज आपको ‘इनके’ द्वारा बहुत लाभ हो गया। मेरे साथ परिचय हुआ न, वही बहुत बड़ा लाभ हो गया। इसे अपूर्व लाभ कहते हैं! किसी काल में नहीं सुना हो, वैसा लाभ कहलाता है! इसलिए किसी को परेशान मत करना। घर के सामने कुत्ता बैठा हुआ हो तो उसे भी परेशान मत करना। वह कुत्ता यदि किसी के पीछे पड़ जाए तो वह व्यक्ति आपके घर में घुस जाएगा और आपको सत्संग करवाएगा। कुत्ता यदि ‘ज्ञानीपुरुष’ के पीछे पड़ गया तो ‘ज्ञानीपुरुष’ आसरा ढूँढ़ेंगे और उसके घर में घुस जाएँगे। देखो, कुत्ता काम में आया न! सभी कुछ काम में आए, ऐसा है इस जगत् में! सभी में परमात्मा बिराजमान हैं और जीवमात्र रात-दिन आपकी सेवा में ही है लेकिन उसे सेवा का लाभ उठाना नहीं आता, लाभ लेना नहीं आता।

सिर्फ व्यक्ति के रूप में सब अलग है लेकिन हैं आत्मा ही, यानी कि वे भी भगवान ही हैं। इसलिए किसी का भी नाम मत देना और किसी को परेशान मत करना। हेल्प हो सके तो करना और नहीं हो तो कोई बात नहीं लेकिन परेशान तो नाम मात्र के लिए भी नहीं करना। लोग बाघ को परेशान नहीं करते, साँप को परेशान नहीं करते

और मनुष्यों को ही परेशान करते हैं, उसका क्या कारण है? बाघ या साँप से तो मर जाएँगे और मनुष्य तो, बहुत हुआ तो लकड़ी से मारेगा या फिर ऐसा ही कुछ करेगा। इसीलिए मनुष्य को परेशान करते हैं न! किसी को भी परेशान नहीं करना चाहिए, क्योंकि भीतर परमात्मा बैठे हुए हैं, आपको समझ में आती है यह बात? आपने किसी को परेशान किया था क्या?

प्रश्नकर्ता : खुद के जो मातहत हों उन्हें लोग परेशान करते हैं।

दादाश्री : जब तक आपको अपने मातहत को कहने की आदत है, डाँटने की आदत है, तब तक आपको भी कोई डाँटने वाला मिल आएगा। मैं किसी को भी नहीं डाँटता, इसलिए मुझे कोई नहीं डाँटता। अपने मातहत डाँटने के लिए नहीं हैं, जिस प्रकार से उन्हें संतोष हो उस प्रकार हमें अपना काम निकाल लेना चाहिए। बैल को रोज़ दस रुपए का खिलाते हैं और तीस रुपए का काम निकलवा लेते हैं। उसी तरह, अपने यहाँ जो मजदूर काम कर रहे हों, वे बेचारे तो यदि उन्हें फायदा होगा तभी अपने यहाँ रहेंगे न? लेकिन हम उसे डाँटते रहें तो वह कहाँ जाएगा? जीवमात्र में भगवान बिराजमान हैं लेकिन मनुष्य में तो भगवान व्यक्त रूप में हैं, ईश्वर स्वरूपी हो गए हैं, भले ही परमेश्वर नहीं बने हैं। ईश्वर क्यों कहलाते हैं? वह यदि मन में पक्का कर ले न कि 'इन्हें एक दिन गोली से मार डालना है,' तो वह एक दिन गोली चलाकर मार सकता है न? इस तरह से ये ईश्वर स्वरूप से है, अतः उनका नाम ही नहीं लेना चाहिए। इसलिए हम कहते हैं न, कि इस काल में एडजस्ट एवरीव्हेर हो जाओ। कहीं भी डिस्एडजस्ट होने जैसा नहीं है। यहाँ से तो भाग छूटने जैसा है। 'यह' विज्ञान

तो एक-दो जन्मों में मोक्ष में ले जाने वाला है, इसलिए यहाँ काम निकाल लेना है।

रक्षा करो अन्डर हैन्ड की

जगत् तो प्यादों को, अन्डर हैन्ड को धमकाए ऐसा है। अरे, साहब को धमका न, वहाँ आप जीत जाओ तो काम का! जगत् का ऐसा व्यवहार है जबकि भगवान ने एक ही व्यवहार कहा था कि तेरे 'अन्डर' में जो आया उसका तू रक्षण करना। जिन्होंने 'अन्डर हैन्ड' का रक्षण किया, वे भगवान बने हैं। मैं छोटा था तब से ही 'अन्डर हैन्ड' का रक्षण करता था।

मैंने तो, अन्डर हैन्ड चाहे कैसा भी गुनहगार रहा हो तो भी उसे बचाया है। लेकिन ऊपरी तो चाहे कितना भी अच्छा हो तो भी मुझे ऊपरी नहीं पुसाता और मुझे किसी का ऊपरी नहीं बनना है। ऊपरी यदि अच्छा हो तो हमें हर्ज नहीं लेकिन उसका यह अर्थ नहीं है कि वह हमेशा ऐसा ही रहेगा! वह कभी हमें सुना (भला बुरा कह) भी सकता है। ऊपरी किसे कहेंगे कि जो अन्डर हैन्ड को संभाले! वास्तव में वही ऊपरी है। मैं खरा ऊपरी खोजता हूँ। मेरा ऊपरी बन पर खरा ऊपरी बन! हम धमकी खाने को नहीं जन्मे हैं। क्या हम इसलिए जन्मे हैं, कि तू हमें धमकाए? ऐसा तू हमें क्या दे देगा?

हम 'अन्डर हैन्ड' का 'प्रोटेक्शन' करें तो 'बॉस' हमारा प्रोटेक्शन करेगा। हम 'अन्डर हैन्ड' को झिड़केंगे तो बॉस हमें झिड़कता रहेगा।

ये तो मूर्ख लोग हैं, नौकरों को परेशान कर देते हैं। अरे, तू जब नौकर बनेगा तब तुझे पता चलेगा। अतः यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो अगर हमारी कभी नौकर बनने की बारी आए तो हमें अच्छा सेट मिलेगा।

वैसे तो आप पुण्यशाली हो, अतः उसकी जगह पर आप नहीं आओगे लेकिन तू तेरे बाँस के हाथ में इसी तरह आ जाएगा, इसलिए सावधान रहना। जिसका तू बाँस है, उस पर ऐसे पावर का उपयोग करना कि तेरा बाँस वैसे ही पावर का उपयोग तुझ पर करे, उस समय तेरी कसौटी नहीं हो! बाँस तो सभी के होते ही हैं न? मेरे जैसा हो, उसके बाँस नहीं हैं बल्कि और सभी के तो बाँस होंगे ही न! जिसे अन्डर हैन्ड का शौक है या जिसे ऐसा रहे मेरे नीचे एक तो चाहिए, उसके बाँस तो होंगे ही। हमें अन्डर हैन्ड का शौक नहीं है, इसीलिए कोई बाँस ही नहीं है।

जिसे 'अन्डर हैन्ड' का शौक है, उसे 'बाँस' मिल ही जाता है!

सत्ता का उपयोग करो समझदारी से

यह तो सत्ता वाला अपने से नीचे वालों को कुचलता रहता है। जो सत्ता का दुरुपयोग करता है, वह सत्ता चली जाती है और ऊपर से मनुष्य जन्म नहीं आता। एक घंटा ही यदि अपनी सत्ता में आए हुए व्यक्ति को धमकाया जाए तो सारी जिंदगी (दूसरे जन्म) का आयुष्य बंध जाता है। विरोध करने वाले को धमकाएँ तो बात अलग है।

प्रश्नकर्ता : सामने वाला टेढ़ा हो तो उसके साथ वैसा ही नहीं होना चाहिए?

दादाश्री : सामने वाले व्यक्ति का हमें नहीं देखना चाहिए, वह उसकी जिम्मेदारी है, यदि लुटेरे सामने आ जाएँ और आप लुटेरे बनो तो ठीक है, लेकिन वहाँ तो सबकुछ दे देते हो न? निर्बल के आगे सबल बनो उसमें क्या है? सबल होकर निर्बल के आगे निर्बल हो जाओ तो सही।

ये ऑफिसर घर पर पत्नी के साथ लड़कर

आते हैं और ऑफिस में 'असिस्टन्ट' का तेल निकाल देते हैं! अरे, 'असिस्टन्ट' यदि गलत हस्ताक्षर करवाकर ले जाएगा तो तेरी क्या दशा होगी? 'असिस्टन्ट' की तो खास ज़रूरत है। हम 'असिस्टन्ट' को बहुत संभालते हैं क्योंकि उसके कारण तो अपना सब काम चलता है।

जगत् न्याय स्वरूप है, इसलिए चेतो

प्रश्नकर्ता : आजकल के जो झगड़े होते हैं न, खास तौर पर मुंबई में और अपने भारत में कहीं भी, बहुत से कारखाने बने हैं बड़े-बड़े...

दादाश्री : 1930 तक मंदी थी। 1930 में सब से बड़ी मंदी थी। उस मंदी में सेठों ने इन बेचारे मज़दूरों का बहुत खून चूसा, इसलिए इस तेज़ी में अभी वे मज़दूर सेठों का खून चूस रहे हैं! इस दुनिया में इसी तरह चूसने का रिवाज है! मंदी में सेठ चूसते हैं और तेज़ी में ये मज़दूर चूसते हैं! दोनों की बारी एक के बाद एक करके आएगी। इसलिए जब ये सेठ चिल्लाते हैं तब मैं कहता हूँ कि आपने 1930 में इन मज़दूरों को नहीं छोड़ा था, इसलिए अभी ये मज़दूर आपको नहीं छोड़ेंगे।

एक काल ऐसा था कि सेठ नौकरों को दुःख देते थे और अब ऐसा काल आया है कि नौकर सेठ को दुःख देते हैं! काल की विचित्रता है! नॉर्मेलिटी में हो तो सबकुछ सुंदर कहलाएगा। सेठ नौकर को दुःख ही नहीं दे और नौकर ऐसी तोड़फोड़ ही नहीं करे।

अगर आप मज़दूरों का खून चूसने का नियम ही नहीं रखोगे तो कोई आपका कुछ नाम ही नहीं देगा। अरे! ऐसे भयंकर कलियुग में भी आपका नाम देने वाला कोई नहीं होता!

घर में भी जब तेज़ी-मंदी आती है, तब उस मंदी में अगर हम पत्नी पर रौब जमाएँगे तो फिर तेज़ी के समय वे हम पर रौब जमाएंगी। इसलिए तेज़ी-मंदी में एक जैसे रहें, समानता से रहें तो आपका सब अच्छा चलेगा!

यह जगत् एक पल भी न्याय के बगैर नहीं रहता। हर पल न्याय ही हो रहा है! जगत् एक क्षण भी अन्याय सहन नहीं कर सकता जो अन्याय दिखाई देता है, वह भी वास्तव में न्याय ही हो रहा है!

हिसाब चुकर रहे हैं, परस्पर

प्रश्नकर्ता : मुंबई में आज मैं जिस कंपनी में काम करता हूँ, उस कंपनी में दो यूनियन बन गई हैं। दोनों यूनियनों में आपसी झगड़ों में खून हो गए हैं।

दादाश्री : उस समय तो यूनियनें ही नहीं थी और यूनियनों का बाप भी नहीं था, अभी तो यूनियन वालों की भी मनमर्जी हो गई है। वे पोल मारते हैं। यूनियनें ही ज्यादा लड़ाई करती हैं। यूनियनें ही ज्यादा झगड़ा करती हैं। वे अपने पैर जमाने के लिए और ऐसा समय आए तब इन सेठ को सीधा करने के लिए। सेठ भी टेढ़े रहते हैं। और अब फिर से वह मंदी आएगी, फिर बर्फ के समान ठंडा हो जाएगा। वैसा तो होता ही रहेगा। मज़दूर इतने अच्छे हैं, अर्थात् बहुत सिन्सियर हैं। अगर हम मज़दूर को (संभाल लेंगे तो), वह अपने यहाँ की नौकरी नहीं छोड़ेगा। अपने घर के व्यक्ति की तरह रहेगा। वह तो इस तेज़ी-मंदी पर आधारित है। अभी तो तेज़ी है इसलिए अभी तो सभी जगह नौकरों का ही रौब है।

श्रेष्ठी कहे जाएँगे या शठ

पुराने ज़माने में, उस समय दानी होते थे।

उनमें मन-वचन-काया की एकता रहती हो तब वे दानी होते थे और भगवान ने उन्हें 'श्रेष्ठी' कहा था। उन श्रेष्ठी को अभी मद्रास में 'शेट्टी' कहते हैं। वहाँ पर उसका अपभ्रंश होते-होते श्रेष्ठी में से शेट्टी हो गया है, वह अपने यहाँ अपभ्रंश होते-होते सेठ हो गया है।

एक मिल के सेठ के यहाँ उसके सेक्रेटरी से मेरी बातचीत हुई। मैंने पूछा, 'सेठ कब आएँगे?' क्या वे कहीं बाहर गए हैं?' तब उसने कहा, 'चार-पाँच दिन लगेंगे।' फिर मुझ से कहने लगा, 'ज़रा मेरी बात तो सुनो।' मैंने कहा, 'हाँ भाई।' तब उसने कहा, 'ऊपर से मात्रा निकाल लेनी चाहिए।' तब मैंने उसे समझाया कि अभी तू तनख्वाह लेता है तब तक कुछ भी मत कहना। जब यहाँ से छूट जाएगा, फिर कहना हो तो कहना। चाहे कैसे भी हो सेठ, लेकिन जब तक उसका नमक खाते हैं तब तक हमें उन्हें सेठ कहना चाहिए। तब वह मुझ से कहने लगा, कि 'साहब, ऊपर से मात्रा निकाल लेना।' मैंने कहा, 'मैं समझ गया हूँ, क्या मैं इन लोगों को नहीं पहचानता? मैं सभी को पहचानता हूँ। लेकिन फिर भी उसमें कहने की मर्यादा होनी चाहिए।' और मात्रा निकाल दें तो बचेगा क्या? बाहर बचत में?

प्रश्नकर्ता : शठ रहेगा।

दादाश्री : नहीं बोलना। ऐसा नहीं बोलना चाहिए!

ऐसी हालत हो गई है! कैसे जगदुशा वगैरह सेठ होते थे! वे सेठ कहलाते थे।

अभी तो श्रेष्ठी कैसे हो गए हैं? दो साल पहले नए सोफे लाया हो तो भी पड़ोसी का देखकर फिर से दूसरे नए सोफे लाता है। ये तो

स्पर्धा में पड़े हुए हैं। एक गद्दा और तकिया हो तब भी चले। लेकिन यह तो देखा-देखी और स्पर्धा चली है। उसे सेठ कैसे कहेंगे? ये गद्दे-तकिये की भारतीय बैठक तो बहुत उच्च है लेकिन लोग उसे समझते नहीं हैं और सोफे के पीछे लगे हैं। फलाँ ने ऐसा लिया है तो मुझे भी वैसा चाहिए। उसके बाद जो कलह होती है! ड्राइवर के घर पर भी सोफे और सेठ के घर पर भी सोफे! यह तो सब नकली घुस गया है। किसी ने ऐसे कपड़े पहने तो जैसे कपड़े पहनने की वृत्ति होती है! यह तो किसी को गैस पर रोटी पकाते हुए देखा तो खुद गैस ले आया। अरे! कोयले और गैस की रोटी में फर्क नहीं समझता? चाहे जो भी खरीदो उसमें हर्ज नहीं है लेकिन स्पर्धा किसलिए? इस स्पर्धा से तो मानवता भी खो बैठे हैं। यह पाशवता तुझ में दिखेगी तो तू पशु में जाएगा!

वर्ना श्रेष्ठी तो खुद पूर्ण सुखी होता है और मुहल्ले में सभी को सुखी करने की भावना में रहता है। जब खुद सुखी हो, तभी औरों को सुख दे सकता है। खुद ही यदि दुःखी हो, वह औरों को क्या सुख देगा? दुःखियारा तो भक्ति करता है और सुखी होने के प्रयत्न में ही रहता है!

बनना सेठ सही अर्थ में

ये व्यापारी कपड़ा खींचकर नापते हैं तो मुझे उन्हें कहना पड़ता है कि, 'सेठ मोक्ष जाने की इच्छा नहीं है अब?' तो वे कहते हैं, 'क्यों ऐसा?' तब मुझे कहना पड़ता है, 'यह कपड़ा खींच रहे हो, तब कौन से ध्यान में हो? महावीर भगवान के ध्यान को तो पहचानो! यह रौद्रध्यान कहलाता है। दूसरों के पास से थोड़ा, एक ऊँगली बराबर भी हड़प लेना, वह रौद्रध्यान कहलाता है।

आपको इतना कहने का अधिकार है, कि ग्राहक पूछे कि, 'इस टेरीलीन का क्या भाव है?' तो आप अट्टारह के बदले साढ़े अट्टारह कह सकते हो लेकिन अट्टारह कहने के बाद में आपको उसे नाप पूरा देना चाहिए, किंचित्मात्र भी कम नहीं। कम नहीं दिया गया हो और कम देने की भावना सिर्फ की, उसे भी 'रौद्रध्यान' कहा है। कम देते समय भूल से वापस ज्यादा भी चला गया होगा तो वहाँ कोई जमा करने वाला नहीं है। सेठ लोगों ने नौकरों से कह रखा होता है कि, 'देख, यह अपने चालीस गज में इतना बचना चाहिए।' यानी उसने फिर अनुमोदना कर रखी होती है।

खुद करता है, करवाता है और कर्ता के प्रति अनुमोदना करता है। यही का यही पूरे दिन रौद्रध्यान है और जैनपना खत्म हो गया है। जैन तो कैसा होता है? भले ही हम कैसी भी मुश्किल में हों, फिर भी अगर उस समय कोई व्यक्ति अपने से हेल्प लेने आए, और वह अपनी मुश्किल जान जाए तो हम जैन कैसे? उसे हेल्प मिलनी ही चाहिए, उसकी आशा भंग नहीं करनी चाहिए। कम-ज्यादा, लेकिन अंत में आपका साथ तो मिलना ही चाहिए। यदि आपके पास पैसों का साधन नहीं हो तो कोई बात नहीं लेकिन आपका साथ तो मिलना चाहिए कि और कोई कामकाज हो तो कुछ कहना। जैन समझकर, सेठ समझकर वह आपके पास आया और बेचारा वापस जाए, निःश्वास लेकर, वह किस काम का! आपको कैसा लगता है? बात मेरी सही है या गलत?

जहाँ अच्छा पेड़ देखते हैं, वहीं लोग छाया के लिए बैठ जाते हैं और यदि पेड़ ही काटने दौड़े तो क्या होगा? जैसे ही अभी ये सेठ काटने दौड़ते हैं कि, 'आप नालायक हो, आप ऐसे हो, आप जैसे हो,' वगैरह। गरीबों को तो आप नालायक

कह सकोगे क्योंकि उन बेचारों की सत्ता नहीं है। और नौकरों का तो पूरे दिन तेल ही निकाल देता है। नौकरों के हाथ से गिरकर प्याले टूट गए कि, 'तेरे हाथ टूटे हुए हैं, तुझे ऐसा है' ऐसे गालियाँ देता है। तब तेरी क्या गति होगी? नौकरों के हाथ टूटे हुए हों तो तू उन्हें नौकरी पर रखता ही नहीं न! ये तो कर्म के कर्ता बन गए! भगवान ने व्यवहार से कहा था, ड्रामेटिक भाव से करना था लेकिन यह तो 'मैं ही कर रहा हूँ, मेरे सिवा कौन करेगा?' उससे तो कर्मबंधन होता है। और वह भी फिर सिर्फ निकाचित कर्म के बंधन होते हैं, हल्के नहीं। उसे तो हल्के कर्म के बंधन होते हैं और इनको तो पक्की गाँठ!

चूसता है खून, हार्ड रौद्रध्यान करके

इस दुनिया में ड्रामा करने की बजाय लोग, यदि कलेक्टर की जगह मिली हो तो वह घर पर सीधा बैठा रहता है लेकिन ऑफिस की कुर्सी में तो आड़ा हो जाता है। हम घर पर जाएँ तो, 'आइए, बैठिए' और कुर्सी में हो तो ऊपर देखता भी नहीं! 'क्या यह कुर्सी तुझे काटती है?' वह तुझे पागलपन लगा देती है? 'मैं हूँ, मैं हूँ' करता है। अरे, किसमें है तू? घर पर तो तुझे पत्नी झिड़कती है!

दूसरा, इस काल में हार्ड रौद्रध्यान बढ़ गए हैं। हार्ड रौद्रध्यान यानी खुद की अधिक बुद्धि से सामने वाले की कम बुद्धि का फायदा उठाकर सामने वाले का छीन लेना, वह हार्ड रौद्रध्यान। यह तो खुद की बुद्धि से सामने वाले को मारता है, सामने वाले का पूरा खून चूस लेता है और उसकी हड्डियाँ और चमड़ी ही बाकी रखता है, फिर ऊपर से कहता है, 'मैंने कहाँ मारा? हमारा तो अहिंसा परमो धर्म!' इन सेठों ने ऐसे-ऐसे

कनेक्शन की व्यवस्था कर दी होती है कि सेठ गद्दी-तकिये पर बैठे रहते हैं और किसान बेचारे रात-दिन मेहनत करते हैं और मक्खन सेठ के घर जाता है और उसके हिस्से में तो छाछ भी नहीं आती! सेठ खुद की अधिक बुद्धि से दूसरे की कम बुद्धि का लाभ उठाकर उसे धीरे-धीरे मारता है। इसे 'हार्ड रौद्रध्यान' कहा है। यह तो एक-एक चपत करके मारता है। एकदम तलवार से दो टुकड़े कर डाले तो वह हार्ड रौद्रध्यान नहीं कहलाता, रौद्रध्यान कहलाता है क्योंकि अगर दो टुकड़े करे तब तो फिर खून देखकर भी उसका मन पीछे हट जाता है कि, 'अरेरे! मुझ से यह मर गया!' लेकिन इस हार्ड रौद्रध्यान से तो मन पीछे नहीं हटता और बल्कि बढ़ता जाता है। खून की एक बूँद भी गिराए बिना सेठ मजदूर के शरीर के खून की एक-एक बूँद चूस लेता है! अब इसकी बराबरी कौन करे? इसका तो टर्मिनस (अंतिम) स्टेशन ही नहीं है न! इस हार्ड रौद्रध्यान का फल तो बहुत भयंकर आता है। सातवीं नर्क में भी नहीं समाए, ऐसा फल। इन हार्ड रौद्रध्यान और अपध्यान को बारीकी से समझना तो पड़ेगा न! आपको क्या लगता है? या फिर समझे बिना चलेगा?

प्रश्नकर्ता : समझना तो पड़ेगा ही, दादा।

दादाश्री : कुछ तो समझना चाहिए न! सब के साथ पारस्परिक संबंध हैं। जगत् अर्थात् क्या? परस्पर सद्भावना! कलेक्टर हो या फिर नौकर हो, लेकिन परस्पर सद्भावना होनी चाहिए और 'हेल्पिंग नेचर' होना चाहिए, 'ओब्लाइजिंग नेचर' होना चाहिए!

उठाते हैं फायदा, कम बुद्धि वालों का

आजकल यों तो लोग जीवों को नहीं मारते

लेकिन बुद्धि से मारते हैं। यह कैसा है? उसका उदाहरण देता हूँ। आप रास्ते से जा रहे हों और रास्ता कीचड़ वाला हो, वहाँ पर आपके पास बहुत उजाला देने वाली कैन्डल हो और अब दूसरे लोग बेचारे लालटेन लेकर आए हों, उन्हें रास्ता ठीक से नहीं दिखाई देता हो, तब आप उन लोगों से कहो कि 'भाई, आ जाओ! मैं यहाँ खड़ा रहता हूँ।' खड़े रहकर उन्हें रास्ता दिखाओ। अपने पास उजाला ज़्यादा है, इसलिए उन्हें उजाला दिखाना, वह हमारा फर्ज है। अब यह जो ज़्यादा बुद्धि है, तो हमारे पास ज़्यादा उजाला है और उसके पास कम उजाला है, वे बेचारे गड़ढे में गिर सकते हैं इसलिए हमें उनके लिए क्या करना चाहिए तुरंत? 'इस तरह से नहीं करना, ऐसा करना भाई,' उसके बजाय बुद्धि से लूटा।

बुद्धि से मारते हैं, वह आपको समझ में आया? ज़्यादा बुद्धि वाले, कम बुद्धि वालों को मार-टोककर गिरा देते हैं। यदि बॉस ज़्यादा बुद्धिशाली हो न तो उसके नीचे वाला काम कर रहा हो, फिर भी उसे डाँटता रहता है। अरे! वह काम कर रहा है फिर भी उसे क्यों डाँट रहा है? और उसकी वाइफ के साथ 'भाई साहब, भाई साहब' करता रहता है। क्योंकि बुद्धि से मारना है। अब अगर पत्नी को बुद्धि से मारने जाए तो पत्नी सोंटा मारती है, इसलिए फिर वहाँ बुद्धि नहीं चलती। सोंटे के सामने बुद्धि नहीं चलती। जहाँ सोंटा देखे न, वहाँ बुद्धि बंद हो जाती है।

गरीब को तो हमें सलाह देनी चाहिए, शांति देनी चाहिए। और उससे अपने ज़्यादा उजाले (सलाह) के पैसे नहीं लेने चाहिए। यह तो बुद्धि ज़्यादा है इसलिए अबुध से पंप मारने को कहता है (उसका गलत फायदा उठा लेते हैं) और बुद्धि ज़्यादा हो, तो मिलावट करना भी आता है न!

इस सोने में मिलावट करना किसने सिखाया होगा? 'हिंदुस्तान के सुनारों ने'। बाहर फॉरेन में मिलावट वाला सोना होता ही नहीं है। ये तो हिंदुस्तान के सुनार! ये सब खोज इन्डियनों की ही है।

सेठपना करने से दंडित होते हैं बेचारे मज़दूर

कितने ही मज़दूर पूरे दिन मेहनत करते हैं, वे बेचारे जब शाम को सेठ से कहते हैं कि, 'सेठ मेरे घर में खाने को कुछ भी नहीं है, इसलिए मैंने आपसे कहा था कि शाम को नक़द पैसे दोगे तभी रहूँगा।' तब सेठ कहता है, 'हाँ, 'नक़द दे देंगे' कहा था लेकिन अभी तो मेरे पास सौ का नोट है। ला पचानवे रुपए, तेरे पाँच ले जा! वर्ना जाना हो तो जा और रहना हो तो रह। नालायक है क्या?' ऐसे दो गालियाँ खाकर बेचारे को पैसे के बगैर घर जाना पड़ता है, क्या करेगा बेचारा! मज़दूर है न! तो क्या सेठ का दोष है? अभी जो भुगत रहा है, उसका दोष है। सेठ पाँच रुपए तो देते नहीं और ऊपर से धमकाते हैं, गालियाँ देते हैं, उसमें किसे भुगतना पड़ा? मज़दूर को। तो मज़दूर की भूल है और सेठ को जब उसका फल मिलेगा तब सेठ की भूल होगी। मज़दूर को उसने धमकाया, गाली दी, दुःख दिया, उसका फल उसे मिलेगा। मज़दूर को तो उसकी भूल का फल पका और अभी मिल गया, जबकि सेठ का तो (कर्म) बंध गया। उसका फल उत्पन्न होगा, पकेगा फिर उसकी बारी आएगी, तब तक सेठ का तो चला!'

तब होता है सच्चा धर्म

वहाँ आपको कैसी *लागणी* (भावनात्मक प्रेम) रखना चाहिए? अगर आप धर्म जैसी चीज़ समझते हो तो आपके पास जो सौ रुपए हों, कहाँ से भी उसकी चिल्लर लाकर मज़दूर को पाँच

रुपए दे देने चाहिए। वह बेचारा पाँच रुपए के लिए पूरा दिन मेहनत करता है, इसलिए उसके आने से पहले आपको राह देखते रहना चाहिए कि कब वह आए और कब उसकी मजदूरी ले जाए! उसके कहने से पहले ही कहें कि 'ले भाई, तेरे पाँच रुपए!' एक मिनट भी देर नहीं करनी चाहिए क्योंकि उसे तो अभी मीर्च खरीदनी होगी, इमली लेनी होगी, क्या-क्या नहीं लेना होगा? फिर तेल की शीशी लेकर आया होता है, उसमें थोड़ा तेल ले जाएगा, ऐसा सब लेकर घर जाता है उसके बाद खाना बनाता है। हमारे यहाँ तो काम पर मजदूर रहते हैं, इसलिए हम यह सब जानते हैं। हमारा तो ऐसा नियम है कि मजदूर के पैसे में कुछ कम-ज्यादा हो जाए तो खबर ले लेता था। सब सख्त हिसाब। उस बेचारे को तो महादुःख, फिर उसे हम और अधिक मुश्किलों में कैसे रख सकते हैं?

अतः किस धर्म का पालन करना है? कोई भी नुकसान करे, कोई भी हमें बैरी नज़र आए तो वह वास्तव में हमारा बैरी नहीं है। कोई नुकसान कर ही नहीं सकता। इसलिए उसके प्रति द्वेष नहीं होना चाहिए। फिर चाहे वे हमारे घर के लोग हों या अगर नौकर से गिलास गिर पड़े तो भी उन्हें नौकर नहीं गिराता है। वह गिराने वाला कोई और है। इसलिए नौकर पर बहुत क्रोध मत करना।

देखना किसी के साथ बैर न बंधे

कुछ लोग क्रोध को दबाते हैं। अरे, दबाने जैसी चीज़ नहीं है वह! क्रोध को पहचानकर दबा न! भैंसे हैं: क्रोध-मान-माया-लोभ! उनमें से अगर क्रोध के भैंसे को ज़रा दबाकर सँकरा करने जाएगा, तो मान का भैंसा अधिक मोटा हो जाएगा! इससे क्या फायदा हुआ? मान का भैंसा बढ़ा। लोग तो एक भैंसे को दबाते हैं न? लेकिन

ऐसा नहीं करना है। क्रोध क्या है? उसे पहचानने की ज़रूरत है।

क्रोध खुद ही अहंकार है। अब उसकी जाँच करनी चाहिए कि वह किस प्रकार से अहंकार है। उसकी जाँच करने पर पकड़ में आता है कि क्रोध अहंकार है। यह क्रोध क्यों उत्पन्न हुआ? क्योंकि 'इस बहन ने कप-प्लेट फोड़ दिए इसलिए क्रोध आ गया।' अब कप-प्लेट फोड़ दिए तो, उसमें हमें क्या परेशानी है? तब कहता है कि, 'हमारे घर में नुकसान हुआ।' नुकसान हो गया तो क्या फिर उसे डाँट दें? लेकिन ऐसा है कि अहंकार करना, डाँटना, वगैरह को अगर बारीकी से सोचा जाए तो सोचने से ही वह सारा अहंकार धुल जाएगा। अब इन कप का टूटना, वह निवार्य है या अनिवार्य है? अनिवार्य संयोग होते हैं या नहीं होते? नौकर को सेठ डाँटता है कि, 'अरे, कप-प्लेट क्यों फोड़ दिए? तेरे हाथ टूटे हुए थे क्या? और तेरा ऐसा था और वैसा था।' यदि अनिवार्य हो तो क्या उसे डाँट सकते हैं? जमाई के हाथ से कप-प्लेट फूट जाएँ तो वहाँ कुछ भी नहीं कहते! क्योंकि वह सुपीरियर है। वहाँ चुप! जहाँ इन्फिरियर हो वहाँ छिट्-छिट् करता है! यह सब इगोइज़म हैं। सुपीरियर के सामने क्या सभी चुप नहीं हो जाते? इन दादा के हाथ से कुछ फूट जाए तो किसी के मन में कुछ आता ही नहीं और नौकर के हाथ से फूट जाए तो?

इस जगत् ने न्याय कभी देखा ही नहीं है। नासमझी के कारण है यह सब। यदि समझदार बुद्धि होती न, तब भी बहुत था! बुद्धि यदि विकसित हो, समझ वाली हो तो कहीं भी कोई झगड़ा होगा ही नहीं। अब झगड़ा करने से क्या कप-प्लेट जुड़ जाते हैं? सिर्फ संतोष होता है, उतना ही न? बल्कि कलह हो जाती है, वह

अलग। मन में क्लेश हो जाता है, वह अलग। यानी इस व्यापार में तो एक तो प्याले गए वह नुकसान; दूसरा, यह क्लेश हुआ वह नुकसान और तीसरा, नौकर के साथ बैर बंधा वह नुकसान! नौकर बैर बाँधता है कि 'मैं गरीब हूँ,' इसीलिए ये मुझे अभी ऐसा कह रहे हैं न! लेकिन वह बैर छोड़ेगा नहीं।

उसमें ज़िम्मेदार कौन?

साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स के आधार पर जो-जो होता है, वह 'व्यवस्थित' है। 'व्यवस्थित' का ज्ञान सभी अवस्थाओं में संपूर्ण समाधानकारी ज्ञान है। इसका आपको एक सादा उदाहरण देता हूँ। एक काँच का गिलास आपके हाथ से छूटने लगा, उसे बचाने के लिए आपने हाथ को ऊपर-नीचे करके अंत तक बचाने का प्रयत्न किया, फिर भी वह गिर पड़ा और टूट गया, तब उसे फोड़ा किसने? आपकी तनिक भी इच्छा नहीं थी कि गिलास टूटे, उल्टे आपने तो उसे अंत तक बचाने का प्रयत्न किया। तब क्या गिलास की खुद की इच्छा थी टूटने की? नहीं, उसे तो ऐसा हो ही नहीं सकता। दूसरा कोई हाज़िर नहीं है फोड़ने वाला तो फिर फोड़ा किसने? 'व्यवस्थित ने'। 'व्यवस्थित' एकज़ेक्ट नियमानुसार चलता है। वहाँ अँधेरनगरी नहीं है। यदि 'व्यवस्थित' के नियम में ये गिलास टूटने ही नहीं होते, तो ये काँच के गिलास के कारखाने कैसे चलते? 'व्यवस्थित' को तो आपका भी चलाना है, कारखाने भी चलाने हैं और हज़ारों मज़दूरों का पेट भी पालना है। अतः नियम से गिलास टूटेगा ही, टूटे बिना रहेगा ही नहीं। तब अभागा, टूटने पर दुःखी होता है, गुस्सा करता है।

अब नौकर के हाथ में से ट्रे गिर जाए,

उसमें बीस प्याले गिर जाए, बीस प्याले यानी महँगे हैं, दो-दो रुपए या तीन-तीन रुपए के कप-प्लेट आते हैं, बीस तीया साठ रुपए। तुरंत भीतर असर हो जाता है या नहीं होता? यदि यह 'ज्ञान' नहीं लिया है तो असर होगा या नहीं होगा लोगों को? यह 'ज्ञान' नहीं लिया हो न तो भीतर अकुलता रहती है। वहाँ सब बैठे होते हैं इसलिए बोलता नहीं है कुछ भी, लेकिन भीतर अकुलाता रहता है कि ये सब उठकर जाएँ तो तुरंत मारूँ नौकर को! मेहमान बैठे हों, तो मन में सोचता रहता है कि कब मेहमान जाएँ और कब मैं नौकर को चार थप्पड़ जड़ दूँ! और फिर, ऐसा करता भी है!

अब वास्तव में 'किसकी भूल है' वह पता नहीं है और भीतर ऐसा ही करता रहता है और यदि नौकर तोड़ता है तो रोज़ ना तोड़े वह? आज ही क्यों तोड़ा? नौकर यदि तोड़ता तो यह तो रोज़ का हुआ।

जब वह हाथ में नहीं पकड़ पाए, तभी टूटेगा न? लेकिन यदि उसकी समझ में आ जाए कि नौकर ने नहीं तोड़ा लेकिन 'व्यवस्थित' ने तोड़ा है तो होगा कुछ? संपूर्ण समाधान रहेगा या नहीं रहेगा? वास्तव में नौकर बेचारा निमित्त है। उसे ये सेठ काटने दौड़ते हैं। यह सब से बड़ा अपराध है। वह यह नहीं जानता कि कौन कर रहा है जगत् तो जो आँखों से जो दिखाई देता है, उसी निमित्त को काटने दौड़ता है। निमित्त को कभी काटना नहीं चाहिए। निमित्त को काटकर तू अपना भयंकर अहित कर रहा है। अरे भाई, मूल रूट कॉज़ (मूल कारण) का पता लगा न? तो तेरा निबेड़ा आएगा।

इस वर्ल्ड में कोई चीज़ कोई फोड़ता ही

नहीं, यह तो सब आपका ही हिसाब चुक रहा है। उसमें नौकर तो बेचारा निमित्त बन जाता है।

अगर नौकर प्याला लेकर आए और वह उसके हाथ से फूट जाए तो भीतर कुछ होता है या नहीं होता? देखो न! प्यालों के लिए विलाप करता है! बच्चों के लिए भी विलाप करता है और प्याले के लिए भी विलाप करता है। सांसारिक लोगों को तो सभी के लिए विलाप करना होता है न? लेकिन आपको समझ जाना है कि आपका हिसाब चुक गया!

कप-प्लेट टूट जाएँ तो अब आपको नौकर से क्या कहना चाहिए? वे टूट जाएँ तो कौन सा ज्ञान हाज़िर रहेगा?

प्रश्नकर्ता : 'व्यवस्थित।'

दादाश्री : हाँ, व्यवस्थित शक्ति, तोड़फोड़ भी करती है और सप्लाई भी करती है। इसलिए आपको बिल्कुल भी परेशान नहीं होना है।

लेकिन उसे मुँह पर ऐसा मत कहना। नौकर को तो हमें ऐसा कहना है कि, 'भाई, तू जला तो नहीं न?' पहले ऐसा पूछना चाहिए। ताकि अगर उसमें सेठ को लेकर कोई घबराहट हो तो चली जाए। फिर कहना कि 'भाई अब से संभलकर चलना, हं!' धीरे-धीरे चलना। इतने शब्द कहना।

डाँटना नहीं, समझाकर काम लो

प्रश्नकर्ता : दादा मेरी और मेरे भतीजे के बीच की प्रॉब्लम की बात करूँ। उसे कहता हूँ कि तू पूरा हिसाब दे, तब हिसाब देने के बारे में वह कच्चा रखता है। वह काम तो सब करता है लेकिन रिपोर्ट नहीं देता इसलिए प्रॉब्लम बढ़ जाती है। फिर कुछ कहें तो उसे बुरा लग जाता है।

दादाश्री : ऐसा है, मेरे साथ क्या हुआ वह बताता हूँ। मेरा एक परिचित हमारे यहाँ नौकरी करता था। वह जब भी हिसाब लिखता तो सब गलत लिखता था। उसे खर्च के लिए दस रुपए की ज़रूरत होती तो चार आने लिखता था। इसलिए फिर मैंने उसे कह दिया कि 'भाई, जितना खर्च होता हो, तूने जो किया हो वही लिखना। सिगरेट लाया हो, ब्राँडी (दारू) पी हो वह लिखना, चाय पी हो, लोगों को चाय पिलाई हो, वह लिखना। तूझे छूट देते हैं। उसके बाद उसने लिखना शुरू कर दिया। तब सभी बातें पकड़ में आईं। डर के मारे लोग लिखें कैसे? सही हिसाब नहीं लिखते, उसका क्या कारण है? अगर वे सही लिख दें तो साहब बार-बार डाँटते रहते हैं, 'ऐ! तूने क्या किया, इतने सारे पैसे किसमें खर्च कर दिए?' यों तो चार आने की भी अक्ल नहीं है और सेठ बन बैठे हैं! ऐसे एन्करेज करना तो आता नहीं इसलिए फिर नौकर डिस्करेज (हताश) हो जाते हैं।

डाँटने से इंसान साफ-साफ नहीं कहता और कपट करने लगता है। संसार में ये सभी कपट डाँटने से ही हुए हैं। डाँटना, वह सब से बड़ा अहंकार है, पगला अहंकार है। डाँटा हुआ काम का कब कहलाता है? यदि पूर्वाग्रह बगैर डाँटे तो। पूर्वाग्रह अर्थात् कल डाँटा था न! वह मन में तो याद ही रहता है। ऐसा ही है, ऐसा ही है और फिर वापस डाँटता है। इसलिए फिर उससे ज़हर फैलता है। भगवान ने उसे भयंकर रोग कहा है, मूर्ख बनने की निशानी है, एक भी अक्षर नहीं बोलना।

वास्तव में सेठ तो किसी को भी नहीं डाँटता है। सेठ वह कहलाता है जो किसी को डाँटे नहीं। जो डाँटे उसे सेठ कैसे कहेंगे? फिर

सभी पीछे से ऐसी बात करते हैं कि ये सेठ तो ऐसे हैं, उनके पीछे कुछ न कुछ नाम दिया ही होता है। सभी नौकरों ने सेठ को कुछ न कुछ नाम दिया ही होता है। ये तो मन में मान बैठे हैं कि मुझे समझ में आता है। उसके बजाय यदि ऐसा रखते कि मुझे कुछ भी समझ में नहीं आता, तो कुछ भी नहीं बिगड़ता। सेठ तो कैसे ठंडे दिखाई देते हैं! उन्हें देखकर ही लोग खुश हो जाते हैं। सेठ आए तो पूरा वातावरण ही ठंडा हो जाता है!!

बीच की ऐजन्सी से काम लो

हमारा लोहे का कारखाना था और तब, जब मैं कारखाने में जाता था। तो सौ एक लोगों 'दादा आए, दादा आए' करते थे। वे दो सौ फुट दूर से देखते तभी से सभी 'दादा आए, दादा आए' करके खुश हो जाते थे। मैं कभी भी किसी को एक अक्षर भी नहीं कहता था। हजार रुपए का नुकसान हुआ होता देखता तब भी एक अक्षर भी नहीं कहता था। अगर किसी ने कोई काम बिगाड़ दिया हो, तब भी डाँटता नहीं था। किसी भी बात में चिल्लाना नहीं।

सेठ तो कभी भी किसी को नहीं डाँटते। कभी बीच में ऐसी ऐजन्सी रख सकते हैं। वह डाँटने वाली ऐजन्सी डाँट लेकिन सेठ को तो डाँटना ही नहीं चाहिए। बीच में ऐसी ऐजन्सी तैयार करे या फिर वैसा डाँटने वाला ऐसे व्यक्ति को बीच में रखे कि डाँटने वाला डाँट लेकिन सेठ ऐसे खुद नहीं डाँटे। फिर सेठ दोनों का समाधान कर दें। सेठ दोनों को बुलाए कि 'भाई, तू डाँटता है, वह भी सही बात है और तेरी बात भी सही है। ऐसे हल कर दे। नहीं तो सेठ क्या कहीं डाँटते होंगे?

ये सभी बातें व्यवहार की हैं! ये आपके क्या काम आएगी?

प्रश्नकर्ता : अरे! इन बातों ने तो हमें सोचने के लिए मजबूर कर दिया कि हम डाँटते हैं उस समय हम सेठ नहीं हैं।

दादाश्री : सेठ तो किसे कहते हैं? यदि एक अक्षर भी बोले तो सेठ कहलाएँगे ही कैसे? वे डाँटने लगे तो हम समझ जाते हैं, कि ये खुद ही असिस्टन्ट है। सेठ का चेहरा तो कभी बिगड़ा हुआ दिखाई ही नहीं देता। सेठ तो सेठ ही दिखते हैं। वे अगर दाँत दिखाकर काटने को दौड़े तो, तो फिर सब के सामने उनकी कीमत ही क्या रहेगी? फिर पीछे से नौकर भी कहेंगे कि ये सेठ तो बहुत ताने मारते रहते हैं! दाँत दिखाते रहते हैं! ऐसा सेठ होने के बजाय गुलाम होना अच्छा। हाँ, अगर आपको ज़रूरत हो और झंझट करनी हो तो बीच में एजेन्सियाँ रखो लेकिन डाँटने के ऐसे काम सेठ को खुद को नहीं करने चाहिए! अगर नौकर भी खुद लड़ते हैं, किसान भी खुद ही लड़ते हैं, और अगर आप भी खुद लड़ो तो फिर कौन खुद नहीं लड़ता? अब अगर व्यापारी भी खुद ही लड़े तो व्यापारी जैसा रहा ही क्या? सेठ तो ऐसा नहीं करते।

आपका भतीजा क्या समझता है कि चाचा का स्वभाव ही ऐसा टेढ़ा है और आप क्या समझते हो कि यह भतीजा मेरी बात नहीं समझता। इस तरह से केस बिगड़ता चला जाता है! अब अगर वह ऐसा नहीं समझे कि चाचा का स्वभाव ही टेढ़ा है, तब तो वह आपकी बात पर ध्यान देगा। लेकिन वह तो बात पर ध्यान नहीं देता इसका अर्थ यही हुआ कि आपका स्वभाव ऐसा ही है। वह ऐसा मान लेता है। क्योंकि रोज-रोज ऐसा

स्वभाव देखता है, इसलिए फिर 'इनका स्वभाव है ही ऐसा' करके केस बिगड़े हैं। इसलिए उपाय करो। बीच में ऐजन्सी रखना और जब वह भतीजे को डाँट और भतीजा आपके पास शिकायत करने आए कि ये मेरे साथ बहुत लड़ते हैं। तब आप उसे कहना कि, 'भाई, सारा काम तो बताना ही चाहिए न! हिसाब तो सभी देने ही पड़ते हैं न!' ऐसा कहोगे तब भतीजा आपकी बात मानेगा। बाकी, लड़ना बंद कर दोगे तब फिर धीरे-धीरे उसके साथ सब ठीक हो जाएगा।

जहाँ व्यवस्थित वहाँ दखल क्यों?

जितना हो सके उतना आत्मा का ही करते रहना है यह संसार में तो कुछ भी इधर-उधर नहीं होगा। संसार में तो आपको 'चंदू भाई' से कहना है कि 'काम किए जाओ।' फिर कुछ गड़बड़ हो जाए तब भी डाँटना नहीं, किसी से लड़ना नहीं। कहना 'काम किए जाओ'।

संसार में किसी को एक अक्षर भी नहीं कहना है। कहना, वह एक प्रकार का रोग है! कह दिया न तो वह सब से बड़ा रोग हुआ! सभी अपना-अपना हिसाब लेकर आए हैं। फिर यह दखल करने की क्या ज़रूरत है? एक अक्षर भी बोलना बंद कर देना। इसीलिए तो हमने यह 'व्यवस्थित' का ज्ञान दिया है। उस व्यवस्थित के ज्ञान के बगैर, इंसान बोले बिना नहीं रह सकता क्योंकि नौकर के हाथ से प्याले टूट गए इसलिए बोले बगैर वह मूआ रहता ही नहीं न! क्यों टूट गए? 'तेरे हाथ टूटे हुए हैं या ऐसा है, वैसा है!' लेकिन अब प्याले फूट गए तो फोड़ने वाला कौन है? वह 'व्यवस्थित' का ज्ञान आपको दिया है। इसलिए कुछ कहना ही नहीं है न! और फिर 'व्यवस्थित' ही हुआ है।

डाँटना, वह है अहंकार

सब 'व्यवस्थित' चलाता है। कुछ कहने जैसा नहीं है, 'अपना' धर्म कर लेना है। पहले तो ऐसे समझते थे कि हम ही चलाते हैं, इसीलिए हमें बोलना पड़ता था। अब तो हमें नहीं चलाना है न! अब तो यह भी लट्टू और वह भी लट्टू! छूट जाओ न यहाँ से!

किसी जगह अच्छी वाणी बोलते होंगे न या नहीं बोलते? कहाँ पर बोलते हो? जिन्हें बाँस मानता है, उनके साथ अच्छी वाणी बोलते हो और अन्डर हैन्ड को फटकारते रहते हो। पूरा दिन 'तूने ऐसा किया, तूने वैसा किया' कहते रहते हो। उससे पूरी वाणी ही बिगड़ जाती है। इसके पीछे यह अहंकार है। इस संसार में कुछ भी कहने जैसा नहीं है। जो भी कहते हैं, वह अहंकार है। पूरा संसार नियंत्रण वाला है।

सेट करो 'व्यवस्थित' का ज्ञान

व्यवस्थित के ज्ञान में रहता है तो कायदा देखना ही नहीं होता न! इसलिए कोई जल्दी आए, कोई देर से आए तो भी व्यवस्थित! इसलिए किसी व्यक्ति को डाँटना नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : इसके बाद हमेशा ही जो देर से आता है, उसे कहना है कि भाई, यो लेट नहीं आना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : कानून में सही या गलत रिजल्ट आता है। कानून सही के लिए लड़ता है, जब भी व्यवस्थित में जो आए उसे एक्सेप्ट करना है।

दादाश्री : हाँ, और व्यवस्थित तो, अगर आप लेट ही जाओ तो मुझे पूछना ही नहीं चाहिए।

मैं समझता हूँ कि आप ऐसे व्यक्ति नहीं हो कि लोट हो जाओ। संयोगों ने उलझाया है जबकि लोग तो ऐसा समझते ही नहीं न? वे तो उसे कहेंगे, 'यह तो तूने ही देर की है। तूने मेरा सारा काम बिगाड़ दिया।' और उसकी बहस चलती है। व्यवस्थित नहीं समझने से सब जगह उलझता है। आपको समझ में आया क्या?

अपने कर्म के कारण सामने वाला उल्टा चलता है

सेठ इनाम दे तो अपना व्यवस्थित और जब अपना 'व्यवस्थित' उल्टा आता है, तब सेठ के मन में ऐसा होता है कि 'इस बार इसका वेतन काट लेना चाहिए।' तब सेठ वेतन काट लेता है, तब मन में ऐसा होता है कि 'यह सेठ नालायक है। मुझे ऐसा नालायक मिला।' लेकिन किसी को ऐसा गुण करना नहीं आता है कि 'अगर वह नालायक होता तो इनाम क्यों दे रहे थे?' इसलिए कुछ भूल है, हिसाब लगाने में अन्य कुछ भूल है! सेठ टेढ़ा नहीं है, यह तो अपना 'व्यवस्थित' पलट रहा है! ये गेहूँ संग्रह करने वाले लोग टेढ़े नहीं हैं। अगर हमें गेहूँ नहीं मिल रहे हैं तो इसका मतलब अपना 'व्यवस्थित' टेढ़ा है। इसलिए हम क्या कहते हैं कि 'भुगते उसी की भूल।' गेहूँ का संग्रह करने वाले वे लोग तो जब पकड़े जाएँगे तब उनकी भूल, तब वे गुनहगार कहलाएँगे। अभी नहीं पकड़े गए हैं। अभी तो मोटरों में घूम रहे हैं, इसलिए 'भुगते उसी की भूल!'

गालियाँ खाई वह भी व्यवस्थित, मार खाई वह भी व्यवस्थित और इनाम मिला वह भी व्यवस्थित। व्यवस्थित कहने का भावार्थ क्या है? तू करने गया सुधार और उल्टा हो गया तो व्यवस्थित कहना। ताकि फिर उसके लिए आर्तध्यान-रौद्रध्यान नहीं होते हैं।

दुःख देने का इरादा तो नहीं है न?

प्रश्नकर्ता : हमारे हाथ नीचे कोई काम कर रहा हो, हमारा बेटा हो या फिर ऑफिस में कोई हो या फिर कोई भी हो तो वह अपना कर्तव्य चूक जाए तो उस समय हमें उसे सही सलाह देनी चाहिए। अब इससे उसे दुःख होता है तो उस समय ऐसा लगता है कि विरोधाभास उत्पन्न होता है वहाँ क्या करना चाहिए?

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं है। जब तक आपकी दृष्टि सही है, तब तक हर्ज नहीं है। लेकिन उसके लिए आपका पाशवता का (दुःख देने का) इरादा नहीं होना चाहिए। विरोधाभास उत्पन्न हो तो फिर हमें उनसे माफ़ी माँगनी चाहिए अर्थात् वह भूल स्वीकार कर लो। मानव धर्म पूरा होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हमारे ऑफिस में तीन-चार सेक्रेटरी हैं। उन्हें कहते हैं कि ऐसा करना है। एक बार, दो बार, चार-पाँच बार कहते हैं तो भी वही भूल करते रहते हैं तो फिर गुस्सा आ जाता है, तो वहाँ क्या करना चाहिए?

दादाश्री : आप तो शुद्धात्मा हो गए हो। अब आपको कहाँ गुस्सा आता है? गुस्सा तो चंदू भाई को आता है। उस चंदू भाई को फिर हमें कहना है, 'अब दादा मिले हैं, ज़रा गुस्सा कम करो न!'

प्रश्नकर्ता : लेकिन वे सेक्रेटरी बिल्कुल भी इम्प्रूव (सुधरना) नहीं होतीं। तो उसका क्या करें? सेक्रेटरी को कुछ कहना तो पड़ेगा न, नहीं तो वे तो वैसी ही गलतियाँ करती ही रहेंगी! वे ठीक तरह से काम नहीं करतीं।

दादाश्री : वह तो हमें 'चंदू भाई' से कहना

है, 'उसे ज़रा डाँटो'। तुझे इससे कहना है कि समभाव से निकाल करके डाँटो। यों ही नाटकीय रूप से डाँटना है कि 'ऐसा सब करोगे तो आपकी सर्विस कैसे रहेगी?' ऐसा सब कहना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसे उस वक्त सामने दुःख होगा न? आपने कहा है न, दुःख नहीं देना है दूसरों को?

दादाश्री : दुःख नहीं होगा। क्योंकि अगर हम नाटकीय बोलेंगे न तो दुःख नहीं होगा उसे, खाली उसके मन में जागृति आ जाएगी, उसका निश्चय बदलेगा। उसे हम दुःख नहीं दे रहे हैं। दुःख तो कब होता है? अपना हेतु दुःख देने का हो न, कि उसे सीधा कर दूँ तो उसे दुःख होता है।

'किसी को दुःख ना हो' वह भाव रखो

प्रश्नकर्ता : मैं डी.एस.पी. का पी.ए. हूँ। वहाँ तो मुझे कितनों को डिसमिस करना पड़ता है, तो उसका मुझे दुःख होता है। तो उससे बंधन होता है क्या?

दादाश्री : कईबार ऐसा होता है न कि आप ऊपर लिखकर भेजो कि इस भाई को डिसमिस करो और वह डिसमिस नहीं होता, ऐसा होता है क्या?

प्रश्नकर्ता : होता है।

दादाश्री : अर्थात् डिसमिस करना, वह भी आपका रूटीन है और मन में भाव रहता है कि डिसमिस नहीं करना है तो उससे बंधन नहीं होगा। यह तो कैसा है, कि जिसका जितना गुनाह है, उसे उतना ही दंड मिलेगा ऐसा नियम है। उसे रोक नहीं सकते। इसलिए हमें ऐसा भाव रखना है कि 'उसे दुःख न हो।' बाकी रूटीन तो चलता ही रहेगा।

फर्ज पूरे करने हैं, 'ज्ञान' में रहकर

प्रश्नकर्ता : अगर हम किसी के गुनाह की रिपोर्ट करें तो हमें गुनाह लगेगा या नहीं?

दादाश्री : नहीं कुछ नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : यह मेरा अन्डर हैन्ड ठीक से काम नहीं करता या घोटाला करता है, अब यह बात मैं अपने साहब को बता दूँ, तब क्या हमें कर्म बंधेगा?

दादाश्री : नहीं बंधेगा।

प्रश्नकर्ता : अगर वह बात नहीं बताएँ तो अपना तंत्र पूरा बिगड़ जाएगा।

दादाश्री : इसलिए साहब को बताना ही पड़ेगा लेकिन विनय रहना चाहिए। आपको उन्हें सब समझाकर कहना चाहिए। रौब से नहीं कह सकते।

प्रश्नकर्ता : बाहर व्यवहार में ऐसा कैसे हो सकेगा?

दादाश्री : आपको तो ऐसा भाव रखना है। फिर जो हुआ वही करेक्ट। आपको ऐसा भाव रखना है और उसे समझाकर कहना ज़रूरी है। फिर जितनी बार समझाकर कहा जाए, उतना करेक्ट और अगर समझाकर नहीं कहा, तो भी करेक्ट।

प्रश्नकर्ता : अब अगर कोई आड़ाई करे लेकिन हमारे पास उसे सजा देने की सत्ता न हो, लेकिन हम अपने ऊपरी को उन्हें सजा देने के लिए रिपोर्ट करते हैं। अब सजा तो ऊपरी ने दी लेकिन रिपोर्ट तो मैंने की, इसलिए निमित्त मैं ही बना न?

दादाश्री : नहीं, लेकिन आपके मन में वैसा भाव नहीं हैं न! यह तो चंदू भाई कर रहा है न! तो आपको क्या करना है? चंदू भाई जो भी करें उसे देखते रहना है। संसार तो चलता ही रहेगा। उसके लिए किसी प्रकार का डर नहीं रखना है। मन में ऐसे भाव रखना कि किसी भी जीव को किंचित्मात्र दुःख न हो, फिर आपको अपना रूटीन करना है। जो भी रूटीन होता है उसमें आपको हाथ नहीं डालना है, शंका-कुशंका नहीं करनी है। आपको अपने स्वरूप में रहना है। बाकी, फर्ज़ तो निभाने ही पड़ेंगे न!

निमित्त बने उसके लिए पश्चाताप करो

प्रश्नकर्ता : आज हम एक नौकरी पर है और जो व्यक्ति हमारा अन्डर हैन्ड है, वह कुछ भी भूल करे तो हमें दंड देना पड़ता है क्योंकि नौकरी में हम ऐसी जगह पर बैठे हुए हैं।

दादाश्री : नहीं, लेकिन अगर ऐसा कुछ हो जाए तो आपको चंदू भाई से पश्चाताप करवाना है। हो जाने के बाद कि 'यह नहीं करने जैसा हो गया है'। आपके निमित्त से उसे दुःख हुआ, उसके लिए पश्चाताप करना कि आपके हिस्से में यह कहाँ से आया? हम क्यों ऐसे निमित्त बने? हमें ऐसे निमित्त नहीं बनना चाहिए। लेकिन अभी आप ऐसी जगह पर आ गए हो कि ऐसा किए बगैर चलेगा नहीं। अब आपको सारा 'रूटीन' तो करना ही पड़ेगा।

जोखिम उठाने के बजाय रास्ता खोजो

प्रश्नकर्ता : गवर्नमेन्ट की बड़ी पोस्ट पर हमारे नीचे वाला जब बहुत उल्टा करने लगे, तब हम निश्चित करते हैं कि इनके सामने कोई कदम उठाएँ और उसे डिसमिस कर दें।

दादाश्री : डिसमिस मत करना। हमें उसे इन्फॉर्मेशन देनी चाहिए कि, 'भाई, ऐसा नहीं होना चाहिए।' वर्ना आपका यह गवर्नमेन्ट का विभाग है, इसलिए डिसमिस तो करना ही मत। आपके ऊपर आपको कोई डिसमिस करने वाला है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : है न!

दादाश्री : तो फिर डिसमिस करने के ऐसे जोखिम तो लेने ही नहीं चाहिए। आपके ऊपरी ऑफिसर कहे फिर भी आपको नरम कर देना चाहिए। अंत में झूठ बोलकर भी नरम कर देना। आपके खुद के डिसमिस होने की बात आए तो, आप पर खुद पर वह डिसमिस शब्द सुनते ही बहुत अधिक असर हो जाएगा न?

प्रश्नकर्ता : होगा न! सभी को होता है।

दादाश्री : तब उस बेचारे पर कितना असर होगा? इस जगत् में किसी को भी दुःख क्यों दे? आप नियमपूर्वक रहो, नियमों में निकलने के सभी रास्ते होते हैं और माइल्ड भाषा होती है या नहीं होती? आपको ऐसा कहना चाहिए, 'आपको डिसमिस क्यों नहीं करें, उसका एक्सप्लेनेशन दो।' और 'मैं आपको डिसमिस कर दूँगा।' इन दोनों वाक्यों में क्या फर्क नहीं है? इसलिए माइल्ड भाषा का उपयोग करना चाहिए। यानी यह तो हमारी ज़िम्मेदारी है, बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि भले ही अपने हाथ से गलत हो, लेकिन किसी को जीवित जाने देना, किसी की नौकरी या पेट पर लात मत मारना।

इस तरह किसी को डिसमिस करना हो तो झूठ बोलकर भी छुड़वा देना चाहिए। फिर अंदर गड़बड़ की है या और कुछ किया है, ऐसा सब देखने की ज़रूरत नहीं है।

व्यवहार में अलिप्त रहकर करो प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : एक अधिकारी हो, बॉस हो, वह अगर अपने अन्डर हैंड को डाँट लगाए तो उसको दुःख तो होगा न? यदि कर्मचारी गलत करे तो उस अधिकारी का फर्ज तो बनता है न कि उसे डाँटे?

दादाश्री : ऐसा है न, इस तरह डाँटना तो बहुत ही बड़ी जिम्मेदारी है। डाँटना यानी अपना हाथ जले नहीं और सामने वाले को लगे नहीं, इस तरह डाँटना चाहिए। लोग देखते करते नहीं है और डाँट ही देते हैं। डाँटने वाला बहुत बड़ा गुनहगार बनता है। डाँट सुनने वाले का जो होना होगा सो होगा लेकिन डाँटने वाला तो फँस जाएगा!

प्रश्नकर्ता : उसका जो फर्ज हो, उस फर्ज के उपलक्ष में उसे कितने कदम उठाने पड़ते हैं। तो उसमें वह क्या करे? उसे तो कोई दूसरा चारा ही नहीं है न? उसे तो करना ही होगा न?

दादाश्री : नहीं, वह करना है लेकिन उसकी एक पद्धति के साथ ऐसी खोज करो कि सामने वाले को बहुत असर न हो।

प्रश्नकर्ता : दूसरी तो खोज क्या करे? वह काम नहीं करता हो तो उसे डाँटना तो पड़ेगा ही न?

दादाश्री : लेकिन तोलकर डाँटते हो या बिना तोले? क्या लोग तोलकर डाँटते होंगे? पाव सेर, यों तोलकर डाँटते होंगे, नहीं? तो कहीं ऐसा किया जाता होगा?

प्रश्नकर्ता : वह तो बगैर तोले डाँटता है लेकिन उसमें तो ऐसा है न नौकरी करते हैं, वहाँ तो निश्चित ही किया होता है कि 'भई, अगर यह

इतना काम नहीं करेगा तो इसके सामने इतने कानूनी कदम उठाने हैं।' ऐसे सब उसके कोड (नियम) निश्चित किए होते हैं।

दादाश्री : कायदे के अनुसार कदम उठाने में कोई परेशानी नहीं है लेकिन ऑन पेपर। लेकिन आप तो डपट बोलकर लगाते हो। वह तोलकर लगाते हो या तोले बगैर लगाते हो?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, वह काम नहीं करता हो, हमने उसे काम कहा हो, वह काम नहीं किया हो और काम टाला हो इसलिए डाँट लगानी ही पड़ती है न?

दादाश्री : हाँ, डाँट लगानी है।

प्रश्नकर्ता : कभी डाँट लगानी पड़ती है। नहीं तो उसे मुक्त करना पड़ता है, डिसमिस करना पड़ता है। बाद में हमें मन में दुःख होता है कि उसके बच्चे भूखे मरेंगे।

दादाश्री : लेकिन ऐसा है न, हमें उसे सावधान करना है कि 'भई, मुझे तुझे मुक्त करना पड़ेगा, डिसमिस करना पड़ेगा इसलिए तू सावधानी से काम कर।'

प्रश्नकर्ता : यों सावधान करते हैं। उसे लिखकर देते हैं कि, 'तू काम नहीं करता, तुझे डिसमिस किया जाएगा। तेरा काम संतोषजनक नहीं है।' ऐसा सब लिखकर देते हैं।

दादाश्री : फिर?

प्रश्नकर्ता : फिर भी नहीं सुधरता इसलिए फिर उसे मुक्त करना पड़ता है और मुक्त करते हैं इसलिए फिर उसके बच्चे बेचारे दुःखी होकर रोते-रोते घर आते हैं। हमें दुःख होता है, उसे भी दुःख तो होता है न!

दादाश्री : दुःख बंद करना हो तो रहने देना। खुद काम कर लेना।

प्रश्नकर्ता : यदि कार्यवाही नहीं करेंगे तो हमें हमारे ऊपरी की डाँट सुननी पड़ेगी।

दादाश्री : तो कार्यवाही करो न। लेकिन इस तरह करो कि आप तो शुद्धात्मा हो। अब चंदू भाई कार्यवाही कर रहे हैं, उससे जोखिमदारी नहीं आएगी। चंदू भाई तो डिस्चार्ज हैं। इसलिए अगर वे कार्यवाही करेंगे तो आपकी जोखिमदारी नहीं है। हमें चंदू भाई से कहना है कि 'हो सके तब तक कुछ नहीं करना है, ऐसी कार्यवाही नहीं करनी है'। फिर भी अगर वह कर ले तो ठीक है!

प्रश्नकर्ता : आपकी यह बात सही है। हमने अलिप्तता से कार्यवाही की लेकिन उससे अगर उस व्यक्ति का मन दुःखी होता है तो उसके लिए प्रतिक्रमण के सिवा और क्या रास्ता है?

दादाश्री : सिर्फ प्रतिक्रमण ही, अन्य कुछ नहीं करना है।

प्राकृतिक स्वभाव के करने हैं प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : नौकरी में फर्ज निभाते हुए मैंने बहुत सख्ती रखकर लोगों के अपमान किए थे, दुत्कार दिया था।

दादाश्री : उन सब का प्रतिक्रमण करना है। उसमें आपका खराब इरादा नहीं है। आपके खुद के लिए नहीं है। वह सरकार के प्रति सिन्सियरिटी (वफादारी) कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : उस हिसाब से मैं बहुत खराब आदमी था, कईयों को तो दुःख हुआ होगा न?

दादाश्री : वह तो आपको इकट्ठा प्रतिक्रमण

करना है, कि मेरे इस सख्त स्वभाव को लेकर जो-जो दोष हुए उनके लिए क्षमा माँगता हूँ, वह अलग-अलग नहीं करना है।

प्रश्नकर्ता : इकट्ठा प्रतिक्रमण करना है?

दादाश्री : हाँ, आपको ऐसा करना है कि 'मेरे इस स्वभाव को लेकर सरकार का काम करते हुए जो-जो दोष हुए, ऐसा किया जिससे लोगों को दुःख हुआ उसके लिए क्षमा माँगता हूँ। रोज़ ऐसा कहना है।

संसार सुधरता है, प्रेम से

भगवान ने कहा है कि बैर किसी के भी साथ मत बाँधना। शायद कभी प्रेम बंधे तो बाँधना लेकिन बैर मत बाँधना क्योंकि प्रेम बंधेगा तो वह प्रेम अपने आप ही बैर को खोद डालेगा। प्रेम की कबर तो बैर को खोद डाले ऐसी है लेकिन बैर की कबर कौन खोदेगा? बैर से तो बैर बढ़ता ही रहता है। निरंतर बढ़ता ही रहता है। बैर के कारण ही तो यह भटकन है सारी! ये मनुष्य किसलिए भटकते हैं? क्या तीर्थकर नहीं मिले थे? 'नहीं, तीर्थकर तो बहुत सारे मिले थे। वहाँ गए थे, वहाँ बैठे थे, उनकी बात सुनी, देशना भी सुनी लेकिन कुछ हुआ नहीं।'

संसार जीत पाओगे अहिंसा की तलवार से

देखो! इस प्रेम के हथियार से ही सब सीधे हो जाते हैं, मुझे किसी को डाँटना नहीं पड़ता। डाँटने से संसार कभी भी नहीं सुधरता। जितना काम अहिंसा की तलवार ने किया है उतना काम हिंसा की तलवार से नहीं हुआ। हिंसा की तलवार से तो हमेशा ही ये झगड़े रहेंगे। अहिंसा की तलवार से लोग बच जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : दादा, लेकिन यह तो वही लोग कर सकते हैं न जिन्हें आत्मा का अनुभव हो ?

दादाश्री : वे ही कर सकते हैं न! औरों को तो ऐसा ध्येय निश्चित करना चाहिए कि 'कुछ भी करके मुझे हिंसा करनी ही नहीं है और अहिंसा की तलवार से ही लोगों के साथ लड़ूँगा।' लड़ेंगे लेकिन अहिंसा से तो उससे परेशानी नहीं होगी। लड़ने में परेशानी नहीं है लेकिन अहिंसा से लड़ो। खराब शब्द बोलेंगे तो हिंसा कहलाएगी। उसके लिए खराब भाव करेंगे तो हिंसा कहलाएगी। ऐसे हिंसक तरीके से नहीं, क्या ?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : मैं बिजनेस करता था तब भी लोगों के साथ ऐसे शब्द बोलता था, यदि वे काम नहीं करते थे, तभी कहता था। यदि नहीं कहें तब भी गलत है, कहें तब भी गलत। मैं ऐसा कुछ कहता था जिसमें हिंसा न हो। इसलिए ऐसा कहता था कि 'मैंने आपका पूर्वजन्म में क्या बिगाड़ा है कि आप सब ऐसा कर रहे हो?' तब फिर वह सावधान हो जाता था, जागृत हो जाता था। ऐसा कुछ कहें जिससे उसे दुःख न हो, चोट न पहुँचे। 'मैंने आपका ऐसा क्या बिगाड़ा है कि आप ऐसा कर रहे हो?' इससे फिर उसके मन में ऐसा भाव होता था कि 'हाँ, ऐसा तो कुछ नहीं बिगाड़ा। यह तो हमने ही भूल की'। ऐसा उसे होता था लेकिन अहिंसा की तलवार का उपयोग करने से तो बहुत अच्छा हुआ। हिंसा की तलवार से तो पूरे संसार में कोई जीत ही नहीं पाया है। वही हार है। हिंसा से ही हार उत्पन्न होती है। जो हिंसा से जीतता है वह भी हारा हुआ ही है और जो हारता है वह भी हारा,

सब हार ही है। अहिंसक तलवार से मैं कभी भी किसी से नहीं हारा। मेरे साथ सभी पावरफुल बुद्धि वाले रहे होंगे लेकिन मेरे पास अहिंसक तलवार है, इसलिए फिर मेरे हारने का कोई कारण ही कहाँ रहा? हिंसक तलवार होगी तो हारेंगे। यदि आपके मन में ऐसी इच्छा हो कि 'मैं बोलकर इन्हें जीत लूँ,' तो मैं पहले से ही कह देता हूँ कि 'भई, मैं तो हारकर बैठा हूँ। आपको जीतना हो तो अब जीत लो।' इसलिए फिर उसका भाव पूरा होता है। उसे संतोष हो जाता है, उसे अच्छी नींद आती है। मुझे तो नींद आ ही जाएगी, उसे नींद आनी चाहिए। नींद न आए ऐसा नहीं होना चाहिए। वह यदि हार जाए तो उसे नींद नहीं आएगी। इसलिए मुझे उसे संभालना नहीं पड़ता इसलिए किसी को हराकर नहीं भेजता।

प्रश्नकर्ता : वह तो आपकी करुणा है।

दादाश्री : वह फिर अपने आप ही कहता है कि 'नहीं, नहीं, हार जाऊँ तो भी कोई परेशानी नहीं है लेकिन मुझे सच जानना है,' तो मैं कहता हूँ कि 'जीतने के बाद वापस हारकर जाएगा यहाँ से इसलिए सोच-समझकर बोलना।' तब कहता है, उसमें मुझे कोई परेशानी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : इस तरह हारने वाले को तो विजेता कहेंगे।

दादाश्री : हाँ, विजेता। इसलिए बात को समझना है। सच्ची और अच्छी है। प्रेम स्वरूप भगवान का है। हमारा जितना प्रेम उत्पन्न होगा, पहले अपने महात्माओं के बीच प्रेम हो जाए न! तब भी बहुत हो गया!

- जय सच्चिदानंद

दादावाणी

विभिन्न सत्संग केन्द्रों में आयोजित गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम

सेन्टर	समय	कार्यक्रम का पता	संपर्क
अजमेर	(9 जुलाई)	शाम 5 से 9 मधुबन सामुदायिक भवन, शोपिंग सेन्टर के पास, नाका मदर, अजमेर	9460611890
अमरावती	(9 जुलाई)	सुबह 10 से 1 दादा भगवान सत्संग सेन्टर, भारतीय महाविद्यालय के पास, राजपेट.	9403411471
औरंगाबाद	(9 जुलाई)	शाम 6 से 9 दादा भगवान परिवार, 'निमिषा बंगलो', पेंडकर होस्पिटल के सामने, जुबली पार्क चौक के पास, पुलिस कमिश्नर रोड.	8308008897
बेंगलोर	(9 जुलाई)	शाम 4 से 6-30 महाराष्ट्र मंडल, दुसरा क्रोस, गांधीनगर.	9590979099
भिलाई	(9 जुलाई)	सुबह 9-30 से 1 दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा वोटर टेन्क के पास.	8349545600
भोपाल	(8 जुलाई)	सुबह 10 से 6 जनकविहार कोम्प्लेक्स, मालवियानगर.	9425024405
भुवनेश्वर	(2 जुलाई)	सुबह 10 से 5-30 रेडक्रोस भवन, युनीट नं-9, सचिवालय मार्ग, Nr.केनरा बैंक.	9668159987
चंडीगढ़	(9 जुलाई)	सुबह 10 से 2 सनातन धर्म मंदिर (धर्मशाला), सेक्टर-32 D	9872188973
चेन्नई	(16 जुलाई)	सुबह 10 से 5 कच्ची भवन, 142, पुरुषवाल्कम, 1 st लेन, कीलपोक.	9380159957
दिल्ली	(9 जुलाई)	सुबह 9-30 से 2 शाह ओडिटोरीयम, गुजराती समाज के पास, सिविल लेन, काश्मिरी गेट मेट्रो स्टेशन के सामने.	9810098564
धनबाद	(9 जुलाई)	शाम 5 से 8 UG A राधा क्रिष्णा एपार्टमेन्ट, रिलायन्स स्टोर के पीछे, कटरास रोड, बैंक मोड.	9431191375
गाज़ियाबाद	(9 जुलाई)	सुबह 10 से 2-30 हाउस # 17E/227, Sec.-17, कोनार्क Ave., वसुंधरा.	9968738972
हुबली/बेलगाम	(16 जुलाई)	सुबह 9-30 से 3 लक्ष्मीनारायण सनातन पाटीदार समाज, प्लोट नं-32, नई टीम्बर यार्ड, उन्कल, हुबली	9513216111
हैदराबाद	(9 जुलाई)	सुबह 10 से 5 कुलपाकजी (कोलनपाक), जैन मंदिर.	9885058771
इन्दौर	(2 जुलाई)	सुबह 10 से 6 दादा दर्शन, 89 B राजेन्द्र नगर, टंकी होल, मेईन रोड, रेल्वे स्टेशन के पास.	9039936173
जबलपुर	(9 जुलाई)	सुबह 10 से 5 4 th Flr., समदरिया मोल, जलसा होल, सिविक सेन्टर	9425160428
जयपुर	(9 जुलाई)	सुबह 10 से 1 श्री चमत्कारेश्वर महादेव मंदिर, बनीपार्क, आईनोक्स मोल के पास.	8233363902
जालंधर	(8 जुलाई)	सुबह 10 से 4 C/O ईगल प्रकाशन कोम्प्लेक्स, सेन्ट्रल मिल कम्पाउन्ड, दमोरिया पुल के पास, पुरानी रेल्वे रोड.	9779233493
जलगाँव	(9 जुलाई)	शाम 4 से 7 व्हाइट हाउस, प्लोट नं-12, गणपति नगर, रोटरी होल पास,	9420942944
कानपुर		ज्यादा जानकारी के लिए संपर्क करे	9452525981
कोलकाता	(9 जुलाई)	सुबह 9-30 से 4 श्रीमद् राजचंद्र सेन्टर, दूसरी मंजिल, 19/2/A श्यामनंदा रोड, बेलटाला गर्ल्स स्कूल के पास,	9830093230
मुंबई	(9 जुलाई)	सुबह 10 से 5 हालारी विशा ओशवाल समाज वाडी, दादा साहेब फालके रोड, दादर(से.रे.)	9323528901
नागपुर	(9 जुलाई)	सुबह 9-30 से 11-30 श्री नागपुर कच्ची विशा ओशवाल समाज, 57/58 अनाथ विद्यालय गृह लेआउट, लकडगंज.	9970059233
नासिक		ज्यादा जानकारी के लिए संपर्क करे	9325074635

दादावाणी

सेन्टर	समय	कार्यक्रम का पता	संपर्क
पाली	(9 जुलाई)	सुबह 9 से 12	मेवाडा समाज भवन, रजत विहार कोलोनी, कोलेज रोड. 9461251542
पटना	(9 जुलाई)	सुबह 9 से 5	जैन भवन, गोबिंद मित्रा रोड, पटना. 7352723132
पूणे	(8 जुलाई)	शाम 4 से 7	महावीर प्रतिष्ठान, कर्वे मार्ग, सेलीबरी पार्क, गुलटेकडी.7218473468
रायपुर	(9 जुलाई)	सुबह 10 से 5	न्यू सत्संग होल, अशोक विहार कोलोनी, इन्डियन ओयल के सामने, रिंग रोड नं-2, भानपुरी, गोंदवारा. 9425245616
वाराणसी	(9 जुलाई)	सुबह 9 से 1	उत्सव वाटिका, गुरुबाग, लाक्षा रोड. 9795228541

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	<ul style="list-style-type: none"> ✦ 'डीडी'-इन्डिया पर हर रोज शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में) ✦ 'साधना' टीवी पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में) ✦ 'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में) ✦ 'दूरदर्शन'-गिरनार हर रोज पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में) ✦ 'अरिहंत' पर हर रोज शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)
USA-Canada	<ul style="list-style-type: none"> ✦ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में) ✦ 'SAB-US' पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 EST
UK	<ul style="list-style-type: none"> ✦ 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में) ✦ 'SAB-UK' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
Singapore	<ul style="list-style-type: none"> ✦ 'SAB- International' पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)
Australia	<ul style="list-style-type: none"> ✦ 'SAB- International' पर हर रोज सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)
New Zealand	<ul style="list-style-type: none"> ✦ 'SAB- International' पर हर रोज दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	<ul style="list-style-type: none"> ✦ 'दूरदर्शन'-नेशनल पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7 ✦ 'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश पर हर रोज रात 9-30 से 10 (हिन्दी में) ✦ 'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में) ✦ 'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार पर हर रोज दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में) ✦ 'दूरदर्शन' गिरनार पर हर रोज रात 10 से 10-30 (गुजराती में) ✦ 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात 8 से 9 (गुजराती में) ✦ 'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
UK	<ul style="list-style-type: none"> ✦ 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
Singapore	<ul style="list-style-type: none"> ✦ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
Australia	<ul style="list-style-type: none"> ✦ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)
New Zealand	<ul style="list-style-type: none"> ✦ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)
USA-UK-Africa-Aus.	<ul style="list-style-type: none"> ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात 10 से 10-30

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, राजकोट : 9924343478, भुज : 9924345588, गोधरा : 9723707738, अंजार : 9924346622, मोरबी : (02822) 297097, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557
 अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद : (079) 27540408, मुंबई : 9323528901, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830093230
 यु.एस.ए.-केनेडा : +1 877-505-DADA (3232), यु.के. : +44 330-111-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया : +61 421127947

दादावाणी

Puja Deepakbhai's USA Satsang Schedule 2017

**Contact no. for all centers in USA : +1-877-505-DADA (3232) &
email for USA - info@us.dadabhagwan.org**

Date	Day	City	Session Title	From	To	Venue	Contact no. & Email
26-Jun	Mon	Silver Spring	Aptaputra Satsang	6:30 PM	9:30 PM	Mangal Mandir, 17110 New Hampshire Ave, MD, 20905	Extn. 1010 mddcva@ us.dadabhagwan.org
27-Jun	Tue	Richmond	Satsang	6:00 PM	9:00 PM	Deep Run High School, 4801 Twin Hickory Rd, VA, 2059	Extn. 1031 richmond@ us.dadabhagwan.org
28-Jun	Wed	Richmond	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
28-Jun	Wed	Richmond	Gnanvidhi	6:00 PM	9:00 PM		
29-Jun	Thu	Richmond	Aptaputra Satsang	6:00 PM	9:00 PM		
5-Jul	Wed	Philadelphia	GP Shibir	10:00 AM	12:30 PM	Philadelphia Marriott Downtown 1201 Market Street, PA, 19107	Extn. 10 gp@ us.dadabhagwan.org
5-Jul	Wed	Philadelphia	GP Shibir	4:30 PM	7:00 PM		
6-Jul	Thu	Philadelphia	GP Shibir	10:00 AM	12:30 PM		
6-Jul	Thu	Philadelphia	GP Shibir	4:30 PM	7:00 PM		
7-Jul	Fri	Philadelphia	Satsang	10:00 AM	12:30 PM		
7-Jul	Fri	Philadelphia	Gnanvidhi	4:30 PM	7:00 PM		
8-Jul	Sat	Philadelphia	Sim. Swami Pran Pratistha	10:00 AM	12:30 PM		
8-Jul	Sat	Philadelphia	GP Shibir	4:30 PM	7:00 PM		
9-Jul	Sun	Philadelphia	Gurupujan	10:00 AM	12:30 PM		
9-Jul	Sun	Philadelphia	Gurupujan	4:30 PM	10:00 PM		
10-Jul	Mon	Philadelphia	GP Shibir	10:00 AM	12:30 PM	Boston Marriott Burlington 1 Burlington Mall Road, MA, 01803	Extn. 1016 boston@ us.dadabhagwan.org
15-Jul	Sat	Boston	Satsang	6:00 PM	9:00 PM		
16-Jul	Sun	Boston	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
16-Jul	Sun	Boston	Gnanvidhi	5:30 PM	8:30 PM		
17-Jul	Mon	Boston	Aptaputra Satsang	6:30 PM	9:00 PM	Jain Temple, 435 North Illinois Rt. 59, IL, 60103	Extn. 1005 chicago@ us.dadabhagwan.org
18-Jul	Tue	Chicago	Satsang	6:30 PM	9:30 PM		
19-Jul	Wed	Chicago	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
19-Jul	Wed	Chicago	Gnanvidhi	5:30 PM	9:00 PM		
20-Jul	Thu	Chicago	Aptaputra Satsang	6:30 PM	9:00 PM	Sringeri Vidya Bharati Foundation, 80 Brydon Drive, Ontario, M9W4N6	Extn. 1006 toronto@ ca.dadabhagwan.org
22-Jul	Sat	Toronto	Satsang	5:00 PM	8:00 PM		
23-Jul	Sun	Toronto	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
23-Jul	Sun	Toronto	Gnanvidhi	5:30 PM	8:30 PM	Rodeway Inn & Conference Center, 773 Saint Andrews Road, SC, 29210	Extn. 1035 columbia@ us.dadabhagwan.org
27-Jul	Thu	Columbia	Aptaputra Satsang	5:00 PM	8:00 PM		
29-Jul	Sat	Raleigh	Satsang	5:30 PM	8:30 PM		
30-Jul	Sun	Raleigh	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
30-Jul	Sun	Raleigh	Gnanvidhi	5:00 PM	8:00 PM	Hindu Society of North Carolina Temple, 309 Aviation Pkwy, NC, 27560	Extn. 1003 raleigh@ us.dadabhagwan.org
1-Aug	Tue	Atlanta	Satsang	7:00 PM	9:30 PM	Gujarati Samaj of Atlanta 5331 Royalwood Parkway, GA, 30084	Extn. 1011 atlanta@ us.dadabhagwan.org
2-Aug	Wed	Atlanta	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
2-Aug	Wed	Atlanta	Gnanvidhi	6:00 PM	9:00 PM		
3-Aug	Thu	Atlanta	Aptaputra Satsang	7:00 PM	9:30 PM		
5-Aug	Sat	Los Angeles	Satsang	5:30 PM	8:30 PM	Sanatan Dharma Temple 15311 Pioneer Blvd., CA, 90650	Extn. 1009 losangeles@ us.dadabhagwan.org
6-Aug	Sun	Los Angeles	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
6-Aug	Sun	Los Angeles	Gnanvidhi	5:00 PM	8:00 PM		

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

12 अगस्त (शनि), शाम 4 से 7 - सत्संग तथा 13 अगस्त (रवि), सुबह 10 से 12 - आप्तपुत्र सत्संग (मुमुक्षुओं के लिए)

13 अगस्त (रवि) शाम 4 से 7-30 - ज्ञानविधि

15 अगस्त (मंगल) रात 10 से 12 - जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति का कार्यक्रम

18 अगस्त से 25 अगस्त (शुक्र से शुक्र) पर्युषण पारायण - आप्तवाणी 13 (उ.) पर वाँचन-सत्संग

26 अगस्त (शनि) सुबह 10 बजे से - पूज्यश्री के दर्शन का विशेष कार्यक्रम

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 9924348880 / 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 3 से 6 के दौरान) पर दि. 30 जुलाई 2017 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-13 (उ.) (गुजराती) पर वाँचन और उसी विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समझ सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते हैं।) 3) ओढ़ने-बिछाने का चदर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयों साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

पूणे

8-9 सितम्बर (शुक्र-शनि), शाम 5-30 से 8-30 - सत्संग तथा 10 सितम्बर (रवि) शाम 5 से 8-30 - ज्ञानविधि

स्थल: गणेश कला क्रिडा मंच, नेहरु स्टेडियम केम्पस, स्वारागेट बस स्टेशन के पास.

संपर्क : 7218473468

11 सितम्बर (सोम), शाम 5-30 से 8-30 - आप्तपुत्र सत्संग - स्थल की जानकारी बाकी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

बिहार

पटना	दि : 8 जुलाई	संपर्क : 7352723132
वैशाली	दि : 10 जुलाई	संपर्क : 9708234981
मुझफरपुर	दि : 11 जुलाई	संपर्क : 9939540790
बख्तियारपुर	दि : 13 जुलाई	संपर्क : 9470083078
गया	दि : 14 जुलाई	संपर्क : 9835623307

महाराष्ट्र

सतारा	दि : 22-23 जुलाई	संपर्क : 9011387150
कोल्हापुर	दि : 24-25 जुलाई	संपर्क : 9960787776
सांगली	दि : 26 जुलाई	संपर्क : 9423870798
सोलापुर	दि : 27 जुलाई	संपर्क : 8421899781
अहमदनगर	दि : 28 जुलाई	संपर्क : 9422225475
नासिक	दि : 29 जुलाई	संपर्क : 9021232111
नागपुर	दि : 29 जुलाई	संपर्क : 9970059233
अमरावती	दि : 30-31 जुलाई	संपर्क : 9403411471
अमरावती	दि : 1 अगस्त	संपर्क : 9403411471
औरंगाबाद	दि : 2 अगस्त	संपर्क : 8308008897
जलगाँव	दि : 3 अगस्त	संपर्क : 8806869874
भुसावल	दि : 4 अगस्त	संपर्क : 8007647330

मध्य प्रदेश

इन्दौर	दि : 1 जुलाई	संपर्क : 9039936173
अंजड़	दि : 3-4 जुलाई	संपर्क : 9617153253
खरगोन	दि : 4 जुलाई	संपर्क : 9425643302
उज्जैन	दि : 5 जुलाई	संपर्क : 9425195647
होशंगाबाद	दि : 6 जुलाई	संपर्क : 9424402646
भोपाल	दि : 7 जुलाई	संपर्क : 9425024405
जबलपुर	दि : 10 जुलाई	संपर्क : 9425160428
दमोह	दि : 11 जुलाई	संपर्क : 9926985853
ग्वालियर	दि : 12-13 जुलाई	संपर्क : 9926265406

दक्षिण भारत

हैदराबाद	दि : 8 जुलाई	संपर्क : 9885058771
नेल्लोर	दि : 10 जुलाई	संपर्क : 9493999052
कोईम्बतूर	दि : 11 जुलाई	संपर्क : 9677573104
तिरुपूर	दि : 12 जुलाई	संपर्क : 9327010101
तिरुचिरापल्ली	दि : 13 जुलाई	संपर्क : 8807055114
मदुराई	दि : 14 जुलाई	संपर्क : 9629230165
चेन्नई	दि : 15 जुलाई	संपर्क : 7200740000

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

अन्दर हैन्ड का रक्षण करना, वही सब से बड़ा ध्येय

इन्सान अपने मातहत को इतना कुचलता है कि कुछ भी बाकी नहीं रखता। जो हमारे रक्षण में है उसका भक्षण कैसे कर सकते हैं? यदि उससे गुनाह हो जाए फिर भी उसका रक्षण करना चाहिए। यह तो बाहर वालों के सामने मियाऊँ बन जाता है, वहाँ पर झगड़ा नहीं करता और घर पर ही सब करता है। जो उसके अन्दर में है उसको कुचलता रहता है और ऊपरी को 'साहब, साहब' करता है। अभी यदि पुलिस वाला झिड़के तो 'साहब, साहब' करता है और अगर घर पर 'वाइफ' सही बात कहे तो भी उससे सहन नहीं होता और उसे झिड़क देता है। 'मेरे चाय के कप में चींटी कहाँ से आई?' इस तरह घर वालों को धमकाता है उसके बजाय तो शांति से चींटी निकाल ले न! जो अपने अन्दर में आए उसका का तो रक्षण करना चाहिए। यही सब से बड़ा ध्येय होना चाहिए।

- दादाश्री

